सप्त व्यसन परिहार

लेखक —

पूज्यपाद प्रखरवक्ता वीरपुत्र
श्री आनन्द सागरजी महाराज

प्रकाशक —
वीरपुत्र श्री आनन्दसागर ज्ञान भंडार

द्रव्य साहायक :—
बीकानेर निवासी रावतमलजी बोथरा पुनरासर वाले
तथा अगवरी निवासी तिलोकचन्दजी सेराजा

वीर संवत २४६७] वि० सम्वत् १९९८ [सन् १९४१

प्रथम संस्करण १०००

मूल्य
सदवर्तन

प्रकाशक—
वीरपुत्र श्री आनन्दसागर ज्ञान भण्डार
कोटा—राजपूताना
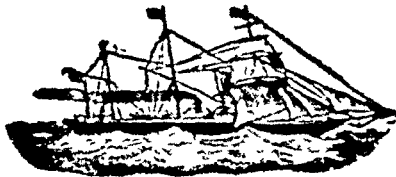
मुद्रक—
राजमल लोढा
भारत प्रिंटिंग प्रेस,
धान मंडी, मन्दसौर

पूज्यपाद प्रवचनवक्ता वीरपुत्र-
श्री आनन्द सागरजी महाराज

समर्पण
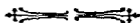
परम-पूज्य सकलागमरहस्यवेदी, प्रकाण्डविद्वान चरित्र-चूडामणि, जैनगगनमार्तण्ड, मुनिसम्राट् परमाराध्य स्वर्गस्थ गुरुदेव श्रीमत् सुखसागरजी महाराज साहब !

आप पतित पावन के समुदाय में निवास कर रत्न-त्रय की आराधना के साथ नानाविध विद्याभ्यास किया और विविध प्रकार से शासन की सेवा की; यह सब आप पूज्यवर का ही प्रताप है। आपके अनेकानेक गुणों की स्मृति में यह "सप्त व्यसन परिहार" नामक लघु ग्रन्थ आप श्री की पवित्र सेवा में सादर सविनय समर्पण करता हूं।

❀ शिवम् ❀

भवदीय चरण किंकर—

वीरपुत्र आनन्दसागर

॥ ॐ ॥

॥ प्राक्कथन ॥
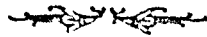
संसार मेदनी पर बसने वाले प्राणियों को अनेक कष्ट उठाना पड़ते हैं, और खास कर बुरी सोबत का ही यह परिणाम होता है—दुष्ट संगति से आदमी दुर्व्यसनी होकर धर्म-कर्म से हाथ धो बैठता है।

खासकर जिस समय जिन व्यसनों का जोर हो, उस समय उनको इन्जकशन लगाना या ऑपरेशन करना (पिचकारी लगाना या नस्तरादि लगाना) विशेष लाभप्रद होना है, यह सोचकर **"सप्त व्यसन परिहार"** नाम के इस लघु ग्रन्थ का हमने निर्माण किया है।

इसमें जूआँ खेलना—मांसभक्षण—मदिरापान—वेश्या गमन—शिकार खेलना चोरी करना और परस्त्री गमन करना, इन सातो व्यसनों का स्पष्टतः विवरण किया गया है, अनेक प्राचीन और अर्वाचीन प्रमाणों से इनकी बुराइयाँ सिद्ध कर दी गई हैं और यह सबूत कर दिया गया है कि शिष्ट मनुष्य को इससे सदा दूर रहना चाहिये, और इसकी जाल में जो फँस रहे हों उन्हें यत्न पूर्वक शीघ्र ही मुक्त हो कर अपना श्रेय साधना चाहिए।

यद्यपि हमारी बनाई हुई 'सप्त व्यसन निषेध' नाम की पुस्तक पॉच आवृतियों में प्रकाशित हो चुकी है और यह उसका ही एक प्रतीक है, तदपि यह नूतन रंग ढंग मे अनेक विशिष्ट प्रमाणों को लेकर और कुछ मजी हुई हिन्दी से भूषित होकर स्वतन्त्र रूपक के साथ प्रकाशित हो रहा है, इस ही से यह पृथक् नाम से विख्यात होता है-यह किसी देश जाति या धर्म से तआलुक नहीं रखता है, इसलिए इसका लोक प्रिय होजाना स्वाभाविक ही है ।

इस लोकोपयोगी ग्रन्थ को छपाने में बीकानेर निवासी रावतमलजी पुनरासर वाले ने तथा अगरजी मारवाड निवासी तिलोकचन्दजी सेराजी ने द्रव्य साहायता दी है, अत उनको साधुवाद घटता है जन समुदाय इससे लाभ उठाकर अपना मानव भव कृतार्थ करे ।

शुभम्

लेखक

❀ ॐ ❀

विषयानुक्रम

❀ शिवम् ❀

सप्त व्यसन परिहार

उत्थान

संसार में अधिकांश लोग व्यसनों में व्यस्त रहते हैं, यह प्रवाह अनादि सिद्ध प्रतीत होता है, तथापि महात्मा लोग उनको बचाने का सतत् प्रयास करते रहते हैं, उस ही नियम के अनुसार हमसे भी प्रस्तुत व्यसनों के परिहार पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाता है।

यहाँ व्यसन शब्द से दुर्व्यसन (दुष्ट व्यवहार) का विधान समझना चाहिए और ये प्रायः कुत्सितजनों के

सहवास मे ही प्राप्त होते हैं; उनसे दूर रहने के लिए ही समझाईश की जायगी।

आदि में उनके नाम यहाँ दिखादिये जाते हैं:—

द्यूतञ्च मांसञ्च सुरा च वेश्या।
पापर्द्धि चोरी परदारसेवा॥
एतानि सप्तव्यसनानि लोके।
घोरातिघोरं नरकं ददन्ते॥ १॥

भावार्थ—जूआ-मांस-मदिरा-वेश्या-शिकार-चोरी और परस्त्री; ये सात व्यसन जगत में अतिशय घोर नरक को देने वाले हैं।

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि प्रथम नम्बर जूआ का दिखाई देता है, वह स कारण है अथवा श्लोक के रचियता ने अपनी इच्छानुसार सहज ही लिख दिया है? उत्तर में यह कहा जा सकता है कि इसमें एक महत्कारण है और वह यह है कि जूआ से सातों व्यसन उत्पन्न होते हैं यानी इस एक में सब समा जाते हैं, इसको प्रमाणित करने वाला एक दृष्टान्त यहाँ दिखलाया जाता है—

(जूआँरी राजा का दृष्टान्त)

किसी एक गांव का राजा बड़ा जुआँरी था, इस व्यसन में उसने राज्य का माग खजाना खत्म कर दिया था और यहाँ तक तंगिनता आ गई थी कि नौकरों को वेतन भी नहीं चुकती थी, तथापि इस व्यसन में संलग्न था, आखिर अपने आज्ञाङ्कितों को आज्ञा की कि गांव में चोरी करके या लूट कर या हरण करके द्रव्य मुझे अर्पण करो! आज्ञा पाते ही नौकरों ने गांव पर धावा बाल दिया और जबरदस्ती से छीन छीन कर राजा की इच्छा पूरी करने लगे, स्त्रियों का बेइज्जती से जेवर उतारा गया; इससे प्रजाजन भारी संकट में आगिरे-सच है! अन्तिम् शरणभूत जब राजा भी ऐसा बर्ताव करे तब किस का शरण लिया जाय, कहा गया है कि—

यदि पित्रा सन्तापित शिशुर्मातु शरण गच्छति,
यदि मात्रा सन्तापित पितु' शरण गच्छति,
यदि उभाभ्या सतापितो महाजनाना शरण गच्छति,
यदि त्रिभि सन्तापितस्तदा राजाऽग्रे गच्छति, पर
यदि राजाप्यन्याय करोति तदा कस्याग्रे कथ्यते ?

अर्थात् यदि बच्चे को पिता दुःख दे तब वह माता के शरण में जाता है और यदि माता दुःख दे तो पिता के शरण में जाता है, यदि दोनों दुःख दें तो महज्जनों का शरण ग्रहण करता है और यदि महज्जन भी दुःख दें तो राजा के सन्मुख जाता है; परन्तु यदि राजा भी अन्याय करता है तब किसके आगे पुकार करे ? यानी किसका शरण ले ?

अहा ! ऐसे संकट के समय मरुधर में कल्पतरु समान एक जैनाचार्य का उद्यान में पदार्पण होगया, प्रजा को मालूम होते ही वह दर्शनार्थ पहुँची, धर्म देशना के पश्चात् सबने अपनी कष्ट कथा आचार्य देव को सुनाई और रक्षा करने की प्रार्थना की—गुरू महाराज ने समवेदना प्रकट करते हुए यह प्रतिज्ञा की कि जनता का जब तक दुःख शमन न होगा तब तक मैं अन्न—जल ग्रहण न करूँगा, धन्य हो ! परोपकारक शिरोमणि को धन्य हो !

स्याद्वाद दृष्टि को सामने रखकर सापेक्ष बुद्धि की प्रेरणा से उन महात्मा ने एक योजना योजित की—वे मुनीश्वर मछली पकड़ने का जाल शिर पर रखकर श्मसान में जा खड़े रहे, बोलना—चलना—बैठना—उठना,

खाना, पीनादि सब त्याग कर ध्यानस्थ रहे, यह हकीकत बिजली के वेग की तरह शहर में फैल गई, प्रजाजन नदी की पूर की तरह उमडने लगे, राजा को ज्ञात होने पर वह भी अपने दल के साथ वहाँ पहुंचा, हजारों की मेदनी से श्मशान भूमि एक नगर के रूप में दिखाई देने लगी।

सिर पर जाल देख कर राजा को भारी आश्चर्य हुआ: ऐसे त्यागी महात्मा की यह स्थिति जान कर इच्छा को न रोक सका और आखिर पूछ ही लिया राजा के प्रश्न और यतीश्वर के उत्तर एक कविता में बताये जाते हैं —

स्वामिन ! यह कथा ? नहीं मछली मारवे को जाल है।
खेले हू शिकार आप ? मास चाह भावते ॥
मास हू भखे हैं आप ? जब सुरा की खुमारी होय।
सुरा हू पिवे हैं आप ? वेश्या संग जावते ॥ १ ॥
वेश्या हू प्रसंग करें ? पर स्त्री जब मिले नाय।
पर स्त्री हू गमन करे ? दाम चोर लाए थे ॥
चोरी हू करें हैं आप ? जब जूओं में हार होय।
एते व्यसन सात—एक जूओं में समाय हैं ॥ २ ॥

अपने प्रश्नों के इस तरह शकाट्य उत्तर सुन कर राजा स्तब्ध हो गया और दीन मुख से मुनीश के सन्मुख खड़ा रहा, साध्य समय की उपस्थिति देख कर सूरीश्वर ने बोधजनक उपदेश दिया और यह सिद्ध कर बता दिया कि एक जूआ से सातों व्यसन उत्पन्न होते हैं—राजा ने उपदेश सुन कर सातों व्यसन का त्याग किया। इस तरह आचार्य देव ने राजा के कष्टों को निवारण किया।

अब क्रमशः एक एक व्यसन का पृथक् पृथक् विवेचन किया जाता है।
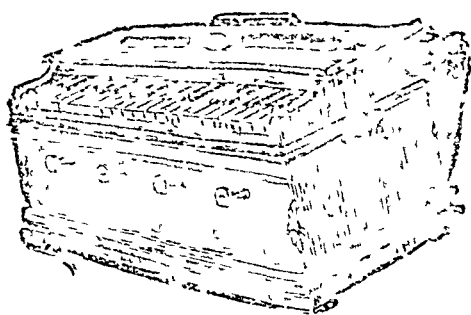
* पहिला व्यसन जूआ *

किसी चीज पर शर्त लगाकर हार-जीत का खेल खेलना 'जूआ" (Gambling) कहा जाता है–फीचर, पानी का जूआ चोपड़ताश, ताश के पत्ते, निज, पाटला और घोड़ों की रेस आदि पैसे लगाना या खाना सब जूआँ में शुमार है। चाँदी, सोना, चाँदी, रुई, अलसी आदि का सट्टा, लोग भाग्य परीक्षा और व्यापार में गिनते हैं, पर किसी अंश में यह भी जूआँ कहा जा सकता है।

जूआँ के इश्क में इनसान इतना गल्तान बन जाता है कि ज्यों ज्यों हारता है त्यों त्यों दुना खेलता है, पैसे पूरे हो जाने के बाद मकान गिरो रख देता है, स्त्री के जेवर और कपड़िया तक बेच देता है, यहाँ तक कि खाने पीने के बरतन और अन्य चीजों को भी फरोख्त कर देता है और कभी कभी इज्जत में भी आग लगा देता है आखिर जेलखाने के स्थान पर मानव जीवन को धूल में मिला देता है।

पुराने जमाने में पाण्डव और नल राजा यहाँ तक जूआँ खेले कि अपनी स्त्री द्रोपदी और दमयन्ती को हार

गये-वर्तमान काल में भी नये-नये प्रकार के सट्टे प्रचलित हो गये हैं, बेकारों को मानो एक जूआ ही मात्र धन्धा रह गया है। गरीब-अमीर, राजा-रंक, पंडित-मूर्खादि सब ही इस तरफ झुके हुए हैं, इसमें प्रायः निन्यानवे फी सदी हारते हैं और एक जीतता है, यानी निन्यानवे डूबते हैं और एक तिरता है, यह प्रत्यक्ष और असमदीठ है; कई राजा-महाराजा और लखपति-क्रोड़पति इससे गारत हो गये, यह बात भी अब छिपी नहीं है। इससे कितने नुकसान होते हैं, उन्हें जरा सुनिये—

द्यूतेनार्थयशः कुलक्रमकला सौंदर्य तेजः सुहृत्।
साधूपासन धर्म चिन्तन गुणा नश्यन्ति साधोरपि॥
यद्वत्पाण्डु सुतेषु तच्च्युतसुधिप्वा दित्यभावार्जिते।
विश्वे किं तमसा स्फुटं घटपट स्तम्भादि वा लक्ष्यते॥१

भावार्थ—जूआ से धन, यशः, कुल मर्यादा, चतुराई सुन्दरता, प्रेम, साधु-सेवा, और धर्म-विचार; ये सब गुण सज्जन व्यक्ति के भी नाश हो जाते हैं; जिस तरह बुद्धि भ्रष्ट पाण्डवों की दशा हुई, सच है! सूर्य के होने पर भी संसार में स्पष्ट रहे हुए घट-वस्त्र-स्तम्भादि क्या अंधेरे में

दिखाई देते हैं ? अर्थात् नहीं दिखाई देते । और भी सुनिये—

माया करोति विकरोति सदैव सत्य।
क्रोध दधाति विदधाति बहुननर्थान् ॥
चौर्ये मतिं तनुते तनुते च दोषान् ।
द्यूते रतो भवति चेन्मनुजः पृथिव्याम् ॥२॥

भावार्थ—पृथिवी पर यदि मनुष्य जुआ में आसक्त हो जाय तो वह प्रपंच करता है, निरन्तर सत्य को विकृत बना देता है यानी मिथ्यावादी बन जाता है,क्रोध को धारण करता है, बहुत अनर्थों को सेवन करता है, एवं चोरी में बुद्धि फैलाता है, और दोषों को विस्तृत करता है।

जुआरी व्यक्ति विश्वास पात्र नहीं बन सकता, उस पर हरएक का हर तरह का वहम रहता है, विश्वास उठ जाने पर जीवन मूल्यहीन हो जाता है इस व्यसन सेवी को सदा आर्तध्यान (संकल्प-विकल्प) बना रहता है, कभी कभी रौद्र ध्यान (क्लिष्ट परिणाम) भी आ जाता

है; जिससे तिर्यंच और नरक का अतिथि बनना पड़ता है।

प्रायः यह व्यसन दिवाले की दरख्वास्त भी दिला देता है और इज्जत-आबरू को धूल में मिला देता है, इससे आदमी तंग होकर आत्म हत्या (Suicide) करने तक पहुंच जाता है।

इस व्यसन से नैतिक जीवन का भारी पतन होकर समाज तथा राष्ट्र के योग्य नहीं रह सकता और धर्म-कर्म से हाथ धो बैठता है; इतना ही नहीं, बल्कि सन्तान पर भी इसका बुरा असर पड़ता है, इससे सारी परम्परा अस्तोव्यस्त बन जाती है—

इससे प्रजा कंगाल बनकर दुःखी हो जायगी और खाने कमाने काबिल न रहेगी. यह सोच कर गवर्नमेंट राज्य में और देशी रियासतों में इसका निरोध करने के लिये कड़ा कानून बनाया, पर पालन में बिन्दी ० नज़र आती है, छड़ेचौक जूआँ खेला जाता है पुलिस और कर्मचारी नजरों से देखते हैं, पर उसको रोकने का सबल प्रयत्न नहीं करते कभी-कभी लोग दिखाव

के लिये दौड़ धूप और पकड़ा पकड़ी करते हैं, सम्भव है विरक्त उनको निमत्त्व बना देती है और इसी से वे कर्तव्यच्युत बन जाते हैं, गवर्नमेंट शासन के सरक्षकों को और राजा महाराजाओं को भी शायद पता होगा, परन्तु मालूम नहीं होता कि वे अपनी जिम्मेवारी को भूल कर इस कदर उपेक्षा क्यों कर रहे हैं? इसकी रोक के लिये कड़े से कड़ा नियन्त्रण कर प्रजा की रक्षा करना चाहिये।

गत पांच वर्ष की इस विषय का एक घटना मेरे स्मृतिपथ में उपस्थित हो जाती है उसका मैं यहां उल्लेख करता हूं- मालवा देशान्तर्गत सैलाना रियासत (हमारी जन्मभूमि) में फीचर के सट्टे का काम शुरू हुआ, वहां की प्रजा खराबियत को भोगने लगी, यह बात मेरे कानों तक पहुंची, उपकार बुद्धि से वहां के पूर्व परिचित और बालमित्र समान वहाँ के वर्तमान नरेश श्रीमान् दलीपसिंहजी बहादुर के. सी. आई. ई. को उस की रोक के लिए लिखा गया, उनका सन्तोषकारक उत्तर मिला, उन दोनों पत्रों को यहां उद्धृत किये जाते हैं—

(हमारा पत्र)

ॐ नमः मु० उज्जैन–मालवा
११–९–१९३६

नृपेन्द्र महोदय !
श्रीमान् दिलीपसिंहजी साहिब के. सी. आई. ई.
सैलाना राज्य

धर्मलाभ पुरस्सर निवेदन है कि यह पत्र एक आव-श्यकीय प्रसंगवश लिखा जा रहा है—

हमने ऐसा श्रवण किया है कि थोड़े समय से फीचर का सट्टा शुरु हो गया है जिससे वहां की गरीब प्रजा प्रलोभन के कारण हतप्रहत हो रही है, इस पर आपका ध्यान आकृष्ट होना चाहिये।

'सट्टा और वेश्या का वसवाट न हो' इसका बड़े दरबार ने पूरा खयाल रक्खा था, यह हमें बराबर याद है—आप श्री ने भी सट्टे वाले पर 'अमुक दण्ड कायम किया है' ऐसा सुना गया है; मगर उसकी रोक में प्रबल प्रयत्न नहीं होने से काम सफल नहीं हो सका है; अतः

उस ओर पूरी निगाह कर आपकी प्रजा को दरिद्रता से बचा लेने की अत्यन्त आवश्यकता है।

आप एक सुज्ञ नरेश हैं और भावि में आपसे बहुत कुछ आशा है, इस खयाल ने निवेदन करने के लिये हमें प्रेरित किया है—विश्वास है कि आप सन्तोषप्रद शीघ्र ही उत्तर देंगे।

शुभम् आपका हितैषी—

VEERPUTRA ANAND SAGAR

C/o Shantinath gali Sarafa Bazar

Ujjain (Malwa)

(दरबार का उत्तर)

Sailana State

Jaswant Vivas Palace

ता० १० दिसम्बर १९३५

स्वामीजी महाराज श्री आनन्दसागरजी,

आपका पत्र मिला। सैलाने में फीचर का सट्टा करने के लिये कानूनी मनादी है, परन्तु यहाँ कुछ लोग छिप कर इस निन्दनीय काम में अपना धन बरबाद करते

थे। पुलिस ने इसकी कड़ी जांच की है, कुछ लोगों पर इस जुर्म के लिये मुकदमा चल रहा है, जहाँ तक संभावना है शासन इसके बन्द करने के लिये पूर्ण प्रयत्न कर रहा है।

दिलीपसिंह

इससे मुझे संतोष हुआ, समस्त भारत के नरेन्द्र इनका अनुकरण करें; यह मेरा अनुरोध है।

जिन जिन समझदार बेपारियों ने अपनी दुकानों में सट्टे का काम नहीं होने दिया है, उनकी दुकाने प्रायः बरकरार नजर आती हैं; और जिनके सट्टे का सौदा होता है वे दिन ब दिन बैठते जाते हैं; यह सब नजरों के सामने है।

जूआँ का धंधा सभ्यता, शिष्टाचार और समझदारी के खिलाफ है; इतना ही नहीं मानव धर्म के लिए एक काला कलङ्क है।

ऊपर के बयान से अब आप ठीक तौर पर समझ गये होंगे कि सकल व्यसनों का जनक जूआँ कितना बुरा है, यदि आप करते हैं तो आज ही त्याग की

तिज्ञा कीजिये, यदि इरादा रखते हैं तो इस दुर्भाव को
दय से समूल नष्ट कर दीजिए और यदि नहीं करते हों
ो ईश्वर का शुक्रियादा कीजिए और सदा सतर्क रह
कर अपने जीवन की रक्षा कीजिये।

❋ दूसरा व्यसन मांस ❋

मांस (Flesh) शब्द से यहाँ मांस भक्षण का मतलब है। स्वयं मरे हुवे या निज से वा अन्य द्वारा मारे हुवे प्राणियों के कलेवर के मांस को खाना 'मांस भक्षण' कहा जाता है।

मांसाहारी की दलीलें हम पहले शान्तता से श्रवण करलें और पीछे अपने विचार प्रकट करें; यह मार्ग सरल-साध्य और ऐच्छानीय होगा।

मांस भक्षकों का यह कथन है कि मांसाहार से शरीर पुष्ट होता है, मजबूत बनता है और शुरातन जागृत होता है; इससे हर एक काम में विजय प्राप्त होती है उनका यह भी कहना है कि मांसाहार से दिल और दिमाग बढता है, यानी मनोबल और बुद्धि बढती है; इस से सर्व इच्छित कार्य सफल होजाते हैं।

मांस खाने वालों ने थोड़ी सी पंक्तियों में अपनी सारी मान्यता रखदी है; अब इस पर विचार किया जाता है—

मृतक मांस और जीवित मांस का मिश्रण होजाने से जीवित मांस की शक्ति हास हो जाती है; जिस तरह आग पर धूल पटकने से उसकी शक्ति नष्ट हो जाती है और चैतन्य के साथ कर्म का सम्मिश्रण हो जाने से आत्म शक्ति का ह्रास हो जाता है, बाहर से शरीर हृष्ट पुष्ट दिखाई देता है, पर वह चरबी बढ़ते हुए रोगी के शरीर की भांति नि सत्व होता है, इससे वह मजबूत नहीं कहा जा सकता तो फिर शूरातन जागृती को तो स्थान ही कहाँ है ! हाँ ! क्रूरता को शूरातन माना जाय तो बात जुदी है, पर यह घरेलु न्याय कायदे से बहिष्कृत है, अतः विजय की प्राप्ति तो 'शशश्रृंगवत्' असंभव है कइयक मांसाहारियों के शरीर जर्जरित नजर आते हैं और ऐसे सत्वहीन दिखाई देते है कि मुँह की मक्खियाँ भी नहीं उड़ती, फिर यह कैसे माना जा सकता है कि मांस भक्षण से शरीर पुष्ट होता है, इस मान्यता में तो निरी अज्ञानता ही प्रतीत होती है।

मांस से तो अन्य खाद्य पदार्थों में जियादा ताकत होती है, यह बात निम्नांकित श्लोक से प्रमाणित हो जाती है।

मांसाद्दशगुणं पिष्टं पिष्टाद्दशगुणं पयः ॥
पयसोऽष्टगुणं चान्न-मन्नाद्दशगुणं घृतम् ॥१॥

भावार्थ-मांस से पिशान (पीसे हुवे पदार्थ) में दस गुना, पिशान से दूध में दस गुना, दूध से नाज़ में आठ गुना और नाज़ से घी में दस गुना बल होता है।

इससे यह स्पष्ट हो गया है कि मांस पौष्टिक खुराक नहीं है-मांस खाने से प्रायः अजीर्ण (Indigestion) रोग हो जाता है, जो सब रोगों का मूल है; कारण कि भारी और कुत्सित आहार से होज़री बराबर काम नहीं करती चार्ल्स डबल्यू फार्वर्ड भी इसमें सहमत हैं।

डा० राबर्ट बेल एम्. डी. एफ. आर. पी. ओ. ने अपनी Cancer Scourage केन्सर स्कारेज पुस्तक में लिखा है कि मांसाहार सिर्फ इंगलेण्ड और वेल्स में प्रति वर्ष ३०००० तीस हज़ार मनुष्य नासूर के रोग से पीड़ित होकर मरण शरण हो जाते है और इस हिसाब से दुनियां भर में करीब २५०००००० ढाई क्रोड़ आदमी इस ही रोग से प्रति वर्ष मृत्यु के मुख में चले जाते हैं; यह कितना दुःखद प्रसंग है-किसी एक दृष्टि से यह उचित भी है कि राज्य कानून भंग करने वाले को दण्ड दिया जाता है और खूनी को फाँसो दी जाती है; उसही प्रकार प्रकृति के नियमों के भंग करने वाले मांसहारियों

को कुदरत की ओर से छोटे बडे रोगों की सजा दी जाती है और विशेष अपराधी को नासूरादि भयङ्कर रोगों द्वारा प्राण दण्ड दिया जाता है।

डा० लीओनार्ड नीलयम्स का यह कथन है कि—मांसाहार से ८५ फी सदी मनुष्य गले की आंतों के रोग से दुःख पाते हैं-इससे दान्तों का रोग होकर दान्त सडने लगते हैं और पायोरिया (दान्तों में पीप का रोग) हो जाता है।

डा० पोल कार्टन का यह वक्तव्य यथार्थ है कि मासाहार से डिस्पेप्सियाएपेन्डीमाइटिस-टाईफोड (आंत का रोग-मोति ज्वर) डायसेन्ट्री (संग्रहणी) क्षय रोग और नासूरादि भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं-डा० कोफन्स वेली की यह जाहिरात मानने योग्य है कि मांसाहारियों के लिए एपेन्डिमाइटिस सामान्य रोग हो गया है, कारण कि पशु-पक्षियों के मास में इस रोग के जन्तु होने से मांसाहारि के शरीर में रहे हुवे समस्त मांस को चेप लग जाता है और इससे वे रोग ग्रस्त होकर भारी यातनाएँ भोगते हैं।

मांचेस्टर के, डी. डोले के कथन से यह साबित होता है कि मांसाहार से गठिया-जलोदरादि लीवर एवं कीड़नी से सम्बंध रखने वाले दर्द उत्पन्न होते हैं, कारण कि इन रोगों का उत्पादक युरिक एसिड है और यह मांस में अधिक मात्रा में होती है-डा० वोन नुरडन को यह मान्यता है कि नाइट्रोजन वाले पदार्थों से संधि वायु (गठिया वाय) आदि लीवर के रोग उत्पन्न होते हैं और नाइट्रोजन मांस में रहता है; अतः मांस से यह बिमारियाँ पैदा होती हैं। डा० फार्कर सन का भी यह मानना है ।

विहजी हेरियन विद्वानों ने परामर्श कर यह निश्चय कर दिया है कि मांस खाना किसी मसरफ का नहीं है Good for nothing देखिये व्रामले केन लेडी मारग्रेट हॉसपिटल के सीनियर डाक्टर मि०जोशिया ओल्डफिल्ड डी.सी. एल. एम. ए. एम. आर. सी. एस. एल. आर. सी. पी. लिखते हैं कि—

"Flesh is unnatural food and therefore tends to exate funetional distur bones As it is taken in modern civilization it is affected with such terrible diseases (Readily commxeinicable to man) as cancer, comsumption, fever, intestinal, worm

ect, to an enormous extent There is little need of wonder that flesh eating is on of the most serious causes of the diseases that cairy of ninty nine out of every hundred peaple tnat are born

(Dr Josiah Old Field)
D C L M A M R C S L R C P

भावार्थ—मास सृष्टि क्रम से विरुद्ध खुराक है और इसही वजह मे इसके खाने से शरीर के कितने ही भागों में खराबी पैदा हो जाती है, अर्वाचीन समय में उसको खाने से मनुष्य को नासूर क्षय-ज्वर और आन्तों के खतरनाक रोग भयकर रूप में उत्पन्न होते हैं, मांसहार बिमारियों की उत्पत्ति का एक गम्भीर कारण है और इससे नब्बानवे फी सदी मनुष्य मरण शरण हो जाते हैं, यह बात निर्विवाद है।

उपरोक्त डाक्टरों के मत का यह साराश है कि मांस में वैपेलिक जन्तु (जहरीले जन्तु) रहते हैं, जो मांस-पक जाने के बाद भी नष्ट नहीं हो सकते, उनसे अनेकानेक प्राणनाशक रोग उत्पन्न होते हैं, इससे यह स्पष्ट होता है कि मांसाहार शरीर का विनाशक है—

मांसाहार से दिल और दिमाग बढ़ता है, यह तो मात्र बालिशता का ही प्रदर्शन है–आमिष भोजी का हृदय क्रूर और जनूनी बन जाता है, कोमलता तो सदा के लिए शीख ले जाती है, इस भोजन से स्वान्त पर बड़ा बुरा असर पड़ता है; हृदय निःसत्व हो जाता है, कारण कि नसें कमज़ोर होकर पतली पड़ जाती हैं; ऐसा डॉ० एच० एस० बुअर का बयान है—अन्न शाकाहार वालों के हृद्त्र की धड़कन से मांस भक्षो के हृदय की धड़कन दस गुनी होती है; ऐसा मि० जे० एच० ओलिवर का कथन है; इससे यह साफ समझा जाता है कि एक मिनिट में १० गुना तो एक घंटे में ६०० छः सौ गुना अधिक जोर से चलता है, इसका परिणाम सहज ही समझा जा सकता है कि ऐसे कमज़ोर दिल के अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

यह तो मानी हुई बात है कि मन की इच्छा हमेशा स्वाभाविक भोजन की तरफ ही दौड़ती है और उसे प्राप्त करने का सतत प्रयत्न करती है—जैसे बकरी हरे पत्तों की ओर लपकती है, बैल घास पर टूट पड़ता है, ऊँट पाले को आनन्द से खाता है और कबूतर दाने पाते ही गट्टर गूँ गट्टर गूँ की रट लगाता है, इसी तरह

मनुष्यों के सामने एक ओर अंगूर – आम – नारंगी – अनार – बादाम – पिस्ता – द्राक्षादि रखें हों और दूसरी ओर मांस के छिछड़े हों तो भला फल और मेवा पसन्द करते, उस मांस को सूँघेगा भी कौन ? एक ओर गुलाबजामुन रसगुल्ला – जलेबी – मिश्रीमावा – मलाई के लड्डू घेवर – फीणी आदि मिठाईयाँ रक्खी हों और दूसरी ओर दुर्गंध युक्त मछलियाँ रक्खी हों, तो कौन ऐसा मूर्ख है कि ऐसी रसवती और सौगंधित मिठाईयों को छोड़ कर मछलियाँ खाय ? मनुष्यों को बागों में हरियाली धान से भरे खेत और फूलों से लदे वृक्षों को देख कर जो आनन्द होता है वह क्या खून और हड्डियों से भरे मांस से हो सकता है ? मनुष्य अपने मकान के पास बगीचा लगाता है, पर क्या कोई कसाई खाना बनवाता है, लोग बागों में तफरी करने जाते हैं, पर क्या कसाई खानों में जाने की किसी की इच्छा होती है-इससे यह जाहिर होता है कि दिल अन्न-दूध-घी-शाक-पान और फल से बढ़ता है; अर्थात् बलवान होता है ।

अब रही दिमाग बढ़ने की बात यानि बुद्धि बढ़ने की बात, इसमें तो उतनी ही सत्यता है जितनी कि

वन्ध्या पुत्र की सिद्धि में, मतलब कि यह बात काबिल मंजूर करने के नहीं है।

कुत्सित और भारी आहार मांस से बुद्धि बढने का यह नवीन आविष्कार शायद राक्षसी समाज से हुआ होगा, बुद्धिवाद का तो यह मानना है कि भारी पदार्थों से अक्ल खफ्त हो जाती है, या दबती हुई क्रमशः नष्ट प्रायः हो जाती है; जहाँ क्रूरता का साम्राज्य हो और जनूनी जोम का दौर दौरा हो, वहाँ विकाश उदयमान् नहीं हो सकता, वरन् अस्ताचल के प्रति ही उसका गमन होता है: इससे जंगलीपन उसमें पैदा हो जाता है।

आपको खयाल होगा कि दिमाग का घना सम्बंध आहार के साथ है, अन्न और फलाहार में शान्त तत्त्व है और मांसाहार में उग्र-तत्त्व है इसीसे फलाहरी का दिमाग शान्त-स्वच्छ और ताजा होता है, मांसाहारी का इससे उलटा क्रूर-म्लेच्छ और सड़ा हुआ दिमाग होता है।

संसार में प्राचीन और अर्वाचीन ऐसे अनेक दृष्टान्त हैं कि मांसाहारी से फलाहारी बल और बुद्धि में चढ़ा बढा होता है बहुत से फलाहारी राजाओं ने मांसाहारी राक्षसों का पराजय किया है, वर्तमान में भी

शाकाहारी पहल्वान् गामा ने विदेशी मांसाहारी पहलवानों को पछाड़ा है ! मिस्टर राममूर्ति ने दूध और फल के बल पर चलती मोटर को रोक देना, सीने पर हाथी खड़ा कर देना वगैरा पराक्रम के अद्भुत प्रयोग करके दिखाये है—आविष्कारों के वैज्ञानी भी प्रायः मांसाहार से दूर रह कर फलाहार अधिक पसन्द करते हैं, बड़े बड़े दिमागी काम सात्विक खुराक वाले ही कर सकते हैं—इसमें यह प्रत्यक्ष होगया कि मांसाहार से दिल और दिमाग (बल और बुद्धि) बढ़ता है, यह मात्र भ्रम है।

इस देवभूमि समान भारत भूमि पर मांसाहार और चर्बी के लिये कितने जीव कत्ल किये जाते हैं, इसका आपको पता है ? शायद आप इंकार ही करेंगे, और क्यों न करें ? आपतो अपने हाल में मस्त हैं, आपको दूसरे की क्या पड़ी है।

सिर्फ बंबई बांदरा के सरकारी कसाई खाने का रोमाञ्चित दृश्य के हाल सुनेंगे तो आप अवश्य ही शिहर उठेंगे और वहां के कत्ल किये गये जानवरों की संख्या सुन कर तो कठोर हृदय के भी नेत्रों में से मोति टपकने लग जायंगे, जरा ध्यान पूर्वक बाँचिये—

※ बांदरा कत्लखाने का दृश्य ※

बांदरा में हर रविवार को गायों का बाज़ार (हाट) भरता है, देशान्तरों से भूख—तृषा सहन करती हुई गायें रिलोंगलिच रेल में भरी हुई बांदरा में इकट्ठी होती हैं, वहां पन्द्रह पन्द्रह, बीस-बीस की संख्या में गले में फाँसा डाल कर दोनों तरफ रस्सी द्वारा खीलों में बांध दी जाती हैं। यद्यपि म्युनिसीपालेटी की तरफ से प्रत्येक जानवर को अमुक रतल घास डालने का नियम है, तदपि देखने वालों को अनुभव होगा कि शायद ही वे घास खाते और ओगलते नज़र आते होंगे। बहुत वक्त गायें वहाँ की वहाँ मर जाती हुई दिखाई देती हैं; इस प्रकार मूक प्राणी भूख-तृषा-परिश्रम का दुःख सहन करता है, आखिर उनका वध कर दिया जाता है।

गायों के माफिक भैंसों का बाजार नहीं भरता है, पर हमेशा बंबई के तबेले में से कसाई लोग खरीद कर के बान्दरा में इकत्रिक करते हैं। गायाओं के मुआफिक भैंसों की भी दशा होती है, चौमासे में जिस जगह भैंसें

बांधी जाती हैं, वहाँ दो दो फीट के करीब कीचड जमा रहता है, बेचारियाँ उनमें फँसी रहती हैं, ऐसी हालत में उनको घास डालने में आवे तो भी कीचड के कारण उनके मुह में बहुत कम आता है, 'काल में अधिक मांस' की तरह वहाँ के कसाई और चमडे के वेपारी माल पर खने आते हैं, वे गरम गरम लोहे के सळियों से भैंसों को पीठ पर डाम लगा देते हैं, इस तरह उनके ऊपर नर उन पर भारी सितम गुजारा जाता है-शाम के समय भैंसों कत्ल खाने में ले जाई जाती हैं, उनका वध होने के पहिले उनमें रहा सहा दूध निकालने का प्रयत्न किया जाता है, अगर आदमी को दूध नहीं देने की हालत में वह जुल्मी लोग जहाँ तहाँ लाठियों के फटके मारते हैं, इससे भय घबराहट से उनको पखाना पेशाब हो जाता है और वे लोग जितना निकाल सकें उतना दूध खींच लेते हैं।

म्युनिसीपाल्टी का यह कायदा है कि गर्भवती गईयों का काटना मना, पर नजर स देखने वालों का कहना है कि कम्पाउण्ड में खडी हुई गईयों में से, कइयक के बच्चे जन्मते हुए वहाँ देखे गये, इसके अतिरिक्त रान्डरा से छुडाई हुई गायों में से किसी किसी गाय को बचा देते

हुए देखा, इससे यह स्पष्ट है कि यह कानून मात्र धोकर पीने का ही है, गर्भवती गइयाँ बराबर वध की जाती है, म्यु० को चाहिये कि इसपर कड़ा नियंत्रण रखे थोड़े दिन पहिले म्युनिसीपालेटी ने एक नियम बनाया है कि ८ आठ वर्ष की गाय-भैंस नहीं काटी जाय, इस प्रशंसा पात्र ठराव को, देश हितैषी काउन्सिलरों ने भी इसकी तरफ अपने मत दिये, पर इसमें देहसत यह रहती है कि ग्याबन गइयाँ जिस तरह छड़े चौक कटती हैं उस तरह इस नियम का भी दिवाला न निकल जाय, इसके लिए काउन्सिलरों में से एक सब कमेटी नियत कर वक्त-वक्त पर कत्ल खाने की मुलाकात लेकर जांच करते रहें, इस पर पूरा ध्यान दिया जाय।

चार बजे शाम को कत्ल खाने का दरवाजा खुलने का समय है, उसके पहले नाटक शाला के दरवाजे खुलने की राह में जिस तरह भीड़ जमा होती है, उसी प्रकार कसाई लोग अपने ढोरों को रस्सियों से बांधे हुए दरवाज़ा खुलने की प्रतीक्षा में खड़े नज़र आते हैं, दरवाज़ा खुलता है उस समय म्युनिसीपालेटी का क्लार्क कसाईयों के ढोरों की संख्या की नोंध करता है—यह इसलिए कि म्यु० एक गाय के कटने के पीछे १॥ रु० और भैंस के पीछे १५ रु० टेक्स लेती है, यह

पापपूर्ण कमाई वर्ष भर में करीब पाँच लाख की होती है, इसका उपभोग जान या अजान से बम्बई की प्रजा कर रही है।

प्रात काल में कत्ल खाना साफ धोया हुआ होने से और कत्ल का कोई चिन्ह न होने से पहिले तो बिना सकोच वे जानवर सीधे अन्दर चले जाते हैं, इस वक्त कसाइयों के आदमी कमर में दो दो, चार-चार छुरे खसोले हुवे तैयार होकर आते हुवे दिखाई देते हैं। खास लक्ष खिचने लायक एक ठिगना बुड्ढा आदमी लम्बा तीक्षण छुरा लेकर अन्दर प्रवेश करता हुवा नजर आता है, उसका काम मात्र जानवरों के गले पर छुरी फेरने का होता है, मतलब कि समय पर सब अपना अपना सरसाम ले लेकर हाजिर हो जाते हैं।

पहिले गाय का मस्तक पकड कर गला दबाते हुए जमीन पर पटकते हैं, पीछे चारों पैर एक माटी रस्सी से मजबूत बाँध देते हैं, पास में खडी गउएँ टगर टगर देखा करती हैं, उस वक्त उनको कितना कष्ट होता होगा उसे आप स्वयं अन्दाजा कर लेना, इस तरह तमाम गायों को नीचे पटक पटक कर पैरों से बाँध दी जाती हैं भय

तो मजबूत जानवर होने से यकायक नीचे गिरा नहीं सकते, इसलिये पहिले अगले पैर मजबूत बांध दिये जाते है, पीछे उसी रस्सी से पीछले पैर कसते ही धड़ाम से भैंस नीचे गिर जाती है, बाद चारों पैर इक्खट्ठे जकड़ दिये जाते हैं, इस वक्त कसाईयों के लड़के जितना खिंच सकें उतना स्तनों में से दूध खिचने में लग जाते हैं, इस समय उन जानवरों को भय और त्रास की कोइ सीमा नहीं रहती, इधर दूध खिच खिच कर निकालने का काम चल रहा हो, उधर से वह यमराज समान लोही में लथ पथ हुवा वह ठिंगना आदमी लम्बा छूरा लेकर वहाँ पहूंच जाता है, दो तीन आदमी उस भैंस का मांथा ऊंचा उठाकर अधर सा रखते हैं, इतने में वह कालसमान आदमी उसके गले पर गहरा छूरा डाल देता है, इस वक्त जैसे पाणी का नल फटने से धोतवन्ध पानी निकालने लगता है, उसी तरह उसके गले से लोही के धोत छूटते हैं विचारे निराधार प्राणी आधा घंटा तड़फ-तड़फ कर आखिर मरण-शरण होते हैं, प्राण निकलने तक जीभ और आंख के डोले बाहर निकल आते हैं, पैर तडफते हों और श्वास का खुर्राट चल रहा हो, उस वक्त के दुःख की कल्पना वाचक महाशय आप स्वयं कर लेना,

फिर आंख मूंद कर दृश्य को निहालना कि अन्दर किस तरह कितनी असर हुई, इस तरह पास में खड़े जानवर टगर टगर देखते हुए कांपते हैं, छाती धड़कती है, आंखों में से टप-टप आंसू गिरते हैं, इस त्रास का माप भी वाचक पर ही छोड़ देते हैं–भैंसों के मानिन्द ही गायों का कत्ल होता है।

कत्ल खाने में ज्यों ज्यों जगह खाली होती जाती है त्यों त्यों नये ढोरों को कम्पाउण्ड में दाखल करते जाते हैं, ज्यों ही कत्ल खाने के नजदीक आते जाते हैं त्यों ही लोही की गंध आने से जरा चमकते हैं फिर आगे बढ़ते अटकते हैं इतने में ऊपर से मार पड़ने लगती है, जिससे आगे बढ़ते हैं, परन्तु अन्दर के भाग में तड़फते हुए जानवरों पर जब नजर पड़ती है तब शीघ्र ही वे अपने काल को देखते हैं और यमपुरी में ले जाय जा रहा है, ऐसा प्रतीत होने से जीव लेकर भागते हैं, श्वास समाता नहीं, मुंह में झाग निकलते हों, ऐसी दयाजनक स्थिति में उनको मार पीट कर किसी तरह भी अन्दर दाखिल करते हैं, जहां सख्या बध प्राणियों के लटकते शरीर, ताजे बध किये हुवे और तड़फते हुए अनेक जानवरों के बीच इन ढोरों को प्राणों का नाश करने के लिए खड़े

कर दिये जाते हैं, इस वक्त इन प्राणियों को इतना दुःख होता होगा कि जिसको नापने के लिए संसार में कोई मिटर (नाप-माप) नहीं है, यह दुःख बिचारे वे अनाथ प्राणी या परमात्मा ही जानता है।❀

इस कत्ल खाने के अन्दर गत चार वर्षों में १५०-००० डेढ़ लाख गाय, ३१००० इकतीस हज़ार भैंस २००० बीस हज़ार छोटी गइयाँ (बिना ब्यायी) और ५८००००० अठावन लाख बैल काट डाले गये; यह एक कसाई खाने का ब्योरा है, भारत में ऐसे सरकारी अठारह कसाई खाने हैं, जिसका टोटल-हर एक वर्ष में १२-५००००० सवा क्रोड़ गाय-बैल वगैरा पशुओं को काटे जाते हैं, घेटा-बकरा तो क्रोड़ों को संख्या में काट दिये जाते हैं; यह सारी हिंसा मांसाहार-हड्डियाँ, चमड़ा-चरबी और सूखा मांस के लिए होती है, जिसमें मांसाहार प्रधान है। देखिये-

ब्रिटिश हिन्द में १०६ कावनियाँ हैं उसके हस्तगत कत्लखाने है, मात्र गोराओं के लिये २००००० दोलाख

❀उपर्युक्त कत्ल खाने का दृश्य 'दूधाळी ढोरनी कतल' नामक गुजराती पुस्तिका से उद्धृत किया गया है।

गाय-बैल काटे जाते हैं इस उपरान्त लश्कर के लिए इन कत्ल खानों के मारफत २०७१४८४६ दो क्रोड़ सात लाख चौदह हज़ार आठ सौ छयालीस पाउण्ड मांस के लिए १०००००० दस लाख गाय बैल काट दिये जाते हैं।

इस के अतिरिक्त छोटे-बड़े कसाई खानों की तलास तो अछूत ही पड़ी है, शायद ही कोई शहर या बड़ा गाँव ऐसा बचा होगा, जहाँ कसाई खाना न हो, यह सब मांसाहारियों के लिए ही होता है।

इस स्थान पर मुझे एक बात याद आगई कि थोड़े समय पहिले मथुरा में गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया का एक जबरदस्त कत्लखाना (वर्तमान कत्ल खाने का बड़ा बाप) खोलना चाहती थी, मगर अहिंसा के अवतार महात्मा गांधी और हिन्द के बड़े बड़े नेता और पब्लिक कार्यकर्ताओं ने अथक प्रयास करके बन्द करवाया-धन्य हो !

कत्लखानें और कसाई खानों से ही मांस भक्षकों के हिंसा की समाप्ति नहीं होती; पर देव देवियों का बलीदान और बकराईद राहु के समान अपने स्वतन्त्र काले प्रकाश में जुदा ही कालाकृत्य करती है—

दशहरे पर—नोरतों में और अमुक मेलों पर देव-देवियों को बकरे भैंसे-घेटे वगैरा जानवरों का बलिदान चढ़ाया जाता हैं, यानी उनको तलवार के घाट उतार दिये जाते है, कलकत्ते की कालिका का बलिदान मशहूर है, देव-देवियों के नाम पर मांसाहारी इस भारत में लाखों जानवर काट डालते हैं;इस तरह मुस्लमीन भाइयों में भी बकरा ईद के त्योंहार पर अगणित बकरे मौत के घाट उतार दिये जाते हैं, बकरा ईद के असलियत के हाल जानने पर आप को पता चल जायगा कि महमडन भाई कितनी भयंकर भूल कर मांसाहार की लोलुपता से निराधार जानवरों का गला काट कर खुदा के गुन्हेगार बनते हैं।

बौद्धधर्म जैन धर्म के बराबरी का अहिंसक धर्म माना जाता है; मगर मांसाहार के विषय में तो वह भी भींत भूल गया, उसका कहना है कि "जानवरों को मार कर नहीं खाना, मरे हुवे का या दूसरे के मारे हुए का मांस खाने में कोई पाप नहीं है" यह तो वैसी मिसाल हुई कि 'तेल का परहेज़ और गुलगुले खाना' क्या यह उचित हो सकता है? मरे हुवे या मारे हुवे मांस

खाने में शारिरीक, हार्दिक, बौद्धिक और आत्मिक तमाम नुकशान होते हैं, तथा हिंसा किसी तरह नहीं रुक सकती, मात्र धर्म के फैलावे की गरज से ही इस गलत रास्ते को अपनाना पडा है, बौद्ध भगवान् ने तप किया था, भूख जोर से लग रही थी, पारणे के दिन एक नदी के किनारे मरा हुआ मच्छ देखा, यह मान करके कि स्वय मरे हुवे को खाने में दोष नहीं, उसे भक्षण कर लिया, तब वहाँ से मांसाहार इस धर्म में आरभ हुवा जो अब तक भारी जोर पकड गया है, मगर हमारी उपर की दलील से यह रास्ता गलत साबित है।

जब से मासाहारादि के लिए पशु धन विध्वंस होने लगा तब से दूध, घी महंगा हुवा और कष्ट से बहुत कम मिलने लगा 'आई ने अकबरी' प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ से मालूम होता है कि अकबर बादशाह के जमाने में दस आने मन दूध और एक आने सेर घी मिलता था, तब आज साडे सात रु० मन दूध और आठ रु० मन घी, वह भी बढिया और मनमाना नहीं, यह सारा ही दोष मुख्यत्वेन मांसाहारियों के ही शिर पर है।

धर्म शास्त्र का भी यह फरमाना है कि मांस में असंख्य जीव होने से अभक्ष्य है। परम पूजनीय अर्बुदाचल निवासी योगीन्द्र महर्षि श्रीमद् विजय शान्तिसूरीश्वरजी महाराज ने हज़ारों मनुष्यों को मांसहार त्याग कराया, कई कोमों में नियमबद्ध बंद कराया और कई स्थानों पर दशहरे की हिंसा और देवियों का बलिदान रुकवा दिया; एवं दूधालु जानवरों की रक्षा का प्रचार किया; आप श्री के इस औपकारिक कार्य के लिए आपको हार्दिक बधाई है; इसी तरह अन्य समर्थों को भी आपका अनुकरण करना चाहिए।

महानुभावो! उपर्युक्त सारे प्रकरण को पुनः मनन पूर्वक पढें और यदि आप मांसाहारी हैं तो आज ही इस राक्षसी खुराक का त्याग कर दें और जीवों को अभय दान देकर आत्महित साधें।
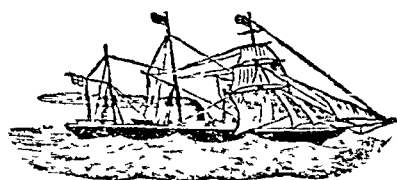
※ तीसरा व्यसन मदिरा ※

यद्यपि मदिरा (Wine) शब्द का अर्थ शराब होता है, परन्तु भंग, माजुम, चरस, गांजा और अफीमादि तमाम मादक पदार्थों का इस व्यसन में समावेश हो जाता है, कॉफी और कोकीन भी इसमें गिना जा सकता है, अर्थात् समस्त नशीली चीजें इसमें शुमार हैं।

कोई कहता है कि नशे में भूख अच्छी लगती है, कोई कहता है वैषयिक खूब मजा आता है, कोई कहता है इससे हृदय बड़ा प्रसन्न रहता है, कोई कहता है दिमाग खूब काम करता है, कोई कहता है इससे निगाह अच्छी जमती है और कोई कहता है ध्यान बढ़िया होता है, हम कहते हैं जान बूझ कर पागल बनने का यह एक निन्दनीय रास्ता है; अब जरा इस पर विचार करें—

नशे से भूख ज्यादा नहीं लगती पर बेभानता से अधिक खा लेते हैं, इससे सब रोगों का मूल अजीर्ण रोग हो जाता है। विषय की अधिकता होजाने से शरीर कमजोर बन जाता है, इससे हृदय प्रसन्न नहीं रहता, पर अमूझन होती है, इससे दिमाग अव्यवस्थित काम करता

है, निगाह जमती नहीं किन्तु एक धुन सवार हो जाती है, इससे तो प्रायः आदमी ध्यान भ्रष्ट होजाता है; शराबी भंगेरी वगैरह की दुर्दशा तो प्रत्यक्ष नज़र आती है रास्तों में-घरों में-मह्लों में और जिधर-किधर गिरते, लथड़ाते, बकते और कुचेष्टा करते चसमदीद होते हैं, विवेक और सभ्यता को तो मानो देशनिकाला हो जाता है, मां-बहन पत्नी-पुत्री; सब के साथ बुरे शब्द-बुरी चेष्टाएँ और बुरा वर्ताव करने लग जाता है, एक कवि ने ठीक ही कहा है—

शराबी मदमस्त हो। फिरे डोलते छैल ॥
सींग पूंछसे रहित सो। निश्चय जानो बैल ॥१॥
नशा न नर को चाहिए। द्रव्य बुद्धि हरलेत।
नीच नशा के कारणे। सब जग ताली देत ॥२॥

शराब में देश के करोडों रुपैये बरबाद होते हैं-सन् १९२०-२१ में मात्र परदेशी शराब में चार क्रोड़ नव्वे लाख दो हज़ार ४९०,०२००० रु० खर्च हुए, देशी दारू में लाखों रू० का खर्च होता है वह सब जुदा है। भारत में शराब के पीछे करीब ८० क्रोड़ रूपैया सालाना

खर्च होता है, जिसमें ६० क्रोड तो नीची श्रेणी के मजदूरादि में हो हो जाता है । इतना अनाप सनाप व्यर्थ खर्च होने पर भारत को रोटी पूरी कैसे मिल सकती है ? सख्यातीत मनुष्य रोटी बिना टलवलें इसमें आश्चर्य क्या ?

इस व्यसन से शरीर में नाना रोग उत्पन्न होते हैं-- डा० वॉमेन्ट का कहना है कि शराब पीने वाले की होजरी में घेन और आवेश पैदा होता है, इससे पाचन क्रिया मन्द होकर रस की थेली निकम्मी बन जाती है और बिगड़े हुवे स्थान पर चान्दियाँ पड़ जाती हैं।

इससे जीवन का अन्त करने वाला क्षयरोग (Phythosis) उत्पन्न होता है, जिससे जीवन को आखिरी सलाम करा देता है, इससे वीर्य पतला पड़कर कमजोरी पैदा करता है और क्रमश अगणित रोग उत्पन्न हो जाते हैं--विद्वान् डाक्टरों ने यह भी साबित कर दिया है कि मदिरा पान से स्नायु मगज ज्ञानतन्तु कलेजा और मुत्राशय वगैरा अवयव सड़ते जाते हैं।

डा० कारपेन्टर ने यह सिद्ध किया है कि मून के

५०८ पांच सौ हिस्सों में एक हिस्सा शराब का मिल जाने से उसके अणु तथा रेसे बदल जाते हैं और इससे खून खराब हो जाता है एक विद्वान् डा० का कहना है कि जिस तरह समुद्र के खारे पानी की भाफ (Steam) शीघ्र तैयार होकर एन्जिन को झड़प से चलाती है और पीछे वह रुक जाता है,इस ही तरह कैफी (नसीली) चीजें शरीर के संचों को वेग से चलाती हैं और ताकत तथा स्फुर्ति नज़र आती है, मगर पीछे शरीर और सांचे दोनों का नाश होता है—मि० पी० कोलोलीअन नाम के अख्यात पाश्चिमात्य शोधक ने जाहिर किया है कि चाहे जिस तरह का शराब मच्छ तक प्राणियों को तथा वनस्पति तक को ज़हर समान है, तो फिर मनुष्य के लिये तो हलाहल जहर है ही; अतः इसके संगी का प्राण लेता है।

व्यसन मुक्त का कलेज़ा बडा मुलायम होता है, इधर नशा पान करने वाले का कलेजा ‘ खीलाठोक ’ कठिन कहलाता है, वह धीरे २ बेकार हो जाता है, इस से हृदय के धड़कन आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, यही दशा मगज की भी होती है, पत्थर जैसा कठोर हो जाने से विचारहीन बन जाता है।

शराब नीति का शत्रु होने से अपराधों का जिम्मेवार भी है, इसके नशे से ६६ फी सदी मनुष्य हमले के ६६ फी सदी लूट के और ७७ फी सदी बलात्कार के गुन्हेगार होते हैं, ऐसा जर्मनी में मालूम हुवा है।

डा० विलार्ड पारकर का अनुभव है कि २० से ३० वर्ष की उम्र के फी सदी ५२ युवक-युवतियों का मदिरापान से मरण होता है-२२ वर्ष की उम्र में सामान्य आदमियों को ४४। वर्ष अधिक जीना मिलता है तब शराबी को मात्र १५॥ वर्ष अधिक मिलता है, एवं ३० वर्ष की उम्र में सामान्य मनुष्य की ३६ वर्ष अधिक जिन्दगी होती है, तब नशेबाज १४ वर्ष मात्र ज्यादा जी सकते हैं, इस तरह बिना मौत मरते हुए संख्यातीत मनुष्य खतम हो जाते हैं, अतः यह राक्षसी कुप्रथा है।

इस दुष्ट व्यसन का सेवन करने वाले अमीर गरीब, राजा रंक, मूर्ख और विद्वान सब ही आसक्त होते हैं-थोड़े ही समय पहिले बड़े बड़े शाह बादशाह-राजा और महाराजा इस नशे में तल्लीन होकर नष्ट हो गये हैं। मुसलमान बादशाहों में भी कइएक इस व्यसन से गारत हो गए हैं बहुत दूर न जाइये महाप्रतापी पृथ्वीराज

चौहान बड़ा शराबी था, इससे वह एक स्त्री के फन्द में पड़कर पायमाल हो गया था—पूर्व काल में यादवों का नाश और द्वारिका की राख इस ही व्यसन से हुई थी—आज कल के कई क्षत्रिय इस व्यसन में लीन हो रहे हैं, छोटे बड़े लोग भी इससे बचे नहीं हैं, ब्राह्मण और महाजन भ्रूण-हत्या की तरह इसे गुपचुप सेवन करते हैं, संभवतः चारों वर्णों में से एक भी वर्ण सम्पूर्णतः नहीं बचा है—मुसलमीन धर्म तो शराब की सख्त मनाह करता है, फिर भी धर्महीन मुसलमान बाज नहीं आते; अंग्रेज लोग भी बरांडी कसरत से पीते है, सारजेन्ट लोग तो प्रायः रात के समय नशे में चकनाचूर रहते हैं;ऐसे शराबियों से सुशासन की आशा नहीं रखी जाती और बहादुरो के काम पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता। इसके पागलपन की धुन ही अन्धाधुन्धी मचाती है।

नशे मे क्या क्या नुकसान होते हैं; उसे जरा आप सुनिये :—

मद्यं मोहयति मनो मोहितचित्तस्तु विस्मरति धर्मम् ॥
विस्मृत धर्मो जीवो । हिंसामविशङ्क माचरति ॥१॥
चित्तभ्रान्तिर्जायते मद्यपानाद्—
भ्रान्ते चित्ते पापचर्यामुपैति ॥

पापं कृत्वा दुर्गतिं यान्ति मूढा ।
तस्मान्मद्यं बुद्धिमद्भिर्न पेयम् ॥२॥

भावार्थ—मदिरा मन को मोहित (विचार शून्य उन्मत्त) करता है और उन्मत्त चित्त धर्म को भूल जाता है, तथा धर्म को भूला हुआ प्राणी स्वच्छन्द होकर हिंसा को आचरने लग जाता है ॥१॥ मदिरा पान से चित्त भ्रान्त हो जाता है और भ्रान्त चित्त होने पर पाप की आचरणा प्राप्त होती है, तथा पाप करके मूर्ख लोग दुर्गति में पहुँच जाते हैं, इसलिये बुद्धिमानों को मदिरा पान कदापि न करना चाहिये ॥२॥

अफीम (अमल) जो नशे में शामिल हैं, उसको खाने वाले वीर्यहीन और पगुले बन जाते हैं, इससे कब्ज मन्दाग्नि, रक्त की न्युनता, फेंफडे और गुर्दे के रोग और आंतों में कमजोरी पैदा हो जाती है, अफीमची अव्वल दर्जे का आलसी, निद्रालु और दरिद्री होता है, उसके मुह में लार टपका करती हैं और मक्खियां भिनभिनाती रहती हैं, मूर्ख माता अपने आराम के लिये बच्चों को अफीम देकर उनकी उगती अवस्था वीर्यहीन और रोगी बना देती है-चीन देश में अफीम का खाना

खाने से आन्तों कटती है और इसमें अनेक रोग पैदा हो जाते हैं सूँघने से नाक और मस्तक कमज़ोर हो जाते हैं, कफ बढ़ता है और पवित्रता तो हवा खा जाती है। व्यसन से कभी लाभ हो तो वन्धया के पुत्र जरूर हो और करतल में वाल भी अवश्य उगनें लगें।

महानुभावो! जरा फुरसत के समय शान्त मगज़ कर स्थिर बुद्धि द्वारा उपरोक्त व्यसन पर विचार करना, परामर्श करना और ऐहिक तथा पारलौकिक लाभ के खातिर इसे त्याग करना; आप अगर शराबी हो, अफीमची हो, भंगेरी हो, माजुम खाने वाले हों, गांजा-चरस और तम्बाखु के पीने वाले हों अथवा चाहे कॉफी और कोकिन के पुजारी हों तो आज ही इन से मुक्त होकर प्रतिज्ञा वद्ध होजाईयेगा, थोड़े ही दिनों में आपको हर तरह फायदा नज़र आवेगा।
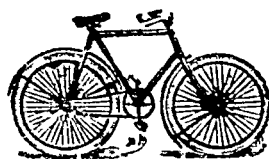
* चौथा व्यसन वेश्या *

वेश्या (Prostitute) शब्द से 'वेश्या गमन' अर्थ समझना चाहिए, इसको गणिका-पात्र-रंडी-भक्तन और विश्ववधू कहते हैं, आखिरी नाम पूरा अन्वयार्थ है, यह किसी खास की स्त्री नहीं होती जगत की पत्नी कहलाती है, सब के साथ पति के समान व्यवहार करती है, अत लक्ष्मी की सदा सह चारिणी होने से पैसे बिना किसी को अपनाती नहीं है। कुमति लक्ष्मी और व्य-भिचारिणी वेश्यासा संयोग ढूंढा नहीं मिलता। ठीक ही कहा है—

जब तक पैसा पास रहेगा। मीठी बात सुनावेगी ॥
कंगाली की यार हालत मे। जूते मार निकालेगी॥१॥

इसकी मीठी वाणी, हाव भाव, कटाक्ष नेत्र, कला कौशल्य और अद्भुत शृंगार मनुष्य को पानी पानी कर देता है, उसकी सारी ठकुराई और दृढता ठिकाने लग जाती है, इज्जत आबरु-खानदानी और व्रत नियम हवा खाने लग जाते हैं, समझदारी और सभ्यता के दिवाले

की दरखास्त लग जाती है; व्यभिचारियों के लिए तो वेश्या का क्रीड़ाभवन स्वर्गपुरी बन जाता है; मगर ऐसे लोग लाभ हानि का कुछ भी खयाल नहीं करते। अब उसके रंगमंच पर खड़े रह कर जरा दृष्टि पात करें कि किस कदर की हकीकतें हैं—

दर्शनाद्धरते चित्तं। स्पर्शनाद्धरते बलम्॥
भोगनाद्धरते वीर्यं। वेश्या प्रत्यक्षराक्षसी॥१॥

भावार्थ—देखने मात्र से चित्त हरा जाता है, स्पर्श से बल हरा जाता है, भोग से वीर्य हरा जाता है, अतः वेश्या साक्षात् राक्षसी है-राक्षसी शरीर को खोखला बनाती है, इस तरह वेश्या भी निःसत्व बना देती है, अतः यह उपमा चरितार्थ है।

आपको यदि कोई कह दे कि तेरी माता के दो खाविन्द हैं, तेरे एक बहन के नाते तीन बहनोई और एक पुत्री के नाते चार जवांई हैं तो आप अपनी इज्जत के लिये दंगा मचा देंगे, परन्तु वेश्या संग से वह शुद्धाचार ऐसा लापता हो जाता है कि सामान्यों को तो भान तक नहीं रहता, वेश्या के यहाँ

जाने की किसी को मुमानियत नहीं है, जो दाम दे वही जा सकता है तो फर्ज कीजिये कि आपने वेश्या गमन किया, उससे एक पुत्री पैदा हुई, यह मानी हुई बात है कि वह वेश्या का धंधा करेगी, पर शीलव्रत न पालेगी और न एक पति ही धारण करेगी, प्रत्युत सोलह शृंगार धारण कर अपने मकान के झरोके में बैठ चलते आदमी को हावभाव दिखा कर इशारे से बुलाएगी और विद्यमान पुरुष का अपने कटाक्षों से भान भुला कर सब धन पचा जायगी और मौका पाकर निकाल देगी, मतलब कि वेश्या का धंधा करने की हालत में, बाप-भाई या पुत्र कोई भी चला जाओ सब के साथ एकसा व्यवहार होता है, कदाचित आप वहाँ भी न पहुचे तो जरा उसके दरवाजे पर बैठकर लिस्ट तो बनाईये कि एक पुत्री और जवाई कितने ? हाँ—हाँ ! धिक्कार है ऐसे तिरस्कृत पुरुष को फिटकार है !

इस व्यसन से शारीरिक-व्यावहारिक और धार्मिक नाना प्रकार के नुकसान होते हैं। जरा ध्यान पूर्वक पढ़िये—
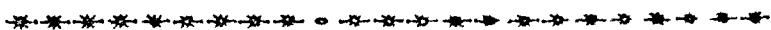
काया हू से काम जात, गांठ हू से दाम जात।
नारी हू से नेह जात, रूप जात रंग से॥
उत्तम सब कर्म जात, कुल के सब धर्म जात।
गुरु जन को शर्म जात काम के उमंग से॥ १॥
गुण-रंग-रीति जात, धर्म हू से प्रीति जात।
राजा से प्रतीत जात अपनी मत भंग से॥
तप जात, जप जात, सन्तान हू की आश जात।
शिवपुर का वास जात, वेश्या प्रसंग से॥ २॥

ऊपर के कवित्त को फिर से पढ़िये और विचारिये किस कदर नुकशान पहुँचते हैं—वेश्यागामी अपनी गृहणी कुलीन होने पर भी उससे नाराज़ रहा करता है, कभी वह नम्रता से कोई प्रार्थना करे तब भी क्रूरता से सामने आता है और वह दुष्टा गालियाँ भी दे तो हँस हँस कर सुनता है। शर्म! शर्म!! शर्म!!!

इस वेश्या से कइएक धन-हीन बलहीन और बुद्धि हीन बन जाते हैं, कई को उपदंशादि (गरमी-सुजाक) की बिमारी लागु पड़ जाती है, इससे सड़ सड़ कर और गल-गल कर मरना पड़ता है, कई को मांस खाना और

शराब पीना और चोरी करना सिखा दिया, दया, क्षमा, लज्जादि गुण इससे नाश होते हैं। वेश्या के संग प्रीति करने का प्रतिकार करते हुये एक कविराज कहते हैं—

मत करो प्रीति वेश्या विष बुझी कटारी।
है यही सकल रोगन की खान हत्यारी मत० टेक०
औषधि अनेक हैं सर्प डसे की भाई।
पर इसके काटे की नहीं कोई दवाई॥
गर लगे बान तो जीवित ही बच जाई।
पर इसके नैन के बान से हाय सफाई॥
है रोम रोम विष भरी करो ना भारी है यही० ॥१॥
यह तन-मन-धन हर लेत मधुर बोली में।
बहुतों का करे शिकार उम्र भोली में॥
कर दिये हजारों लोट पोट होली में।
लाखों का मन कर लिया कैद चोली में॥
गई इसी कर्म में लाखो की जमींदारी-है यही०॥२॥
हो गये हजारों केवल बीरज छारा।
लाखों का इसने वश नाश कर डारा॥

गठिया प्रमेह आदिक मे देश बिमारा।
भारत गारत होगया इम ही का मारा।
कर दिये हजारों इसने चौर जुआँरी है यही ॥३॥
इस ही ठगनी ने मद्य-मांस सिखलाया।
सब धर्म कर्म को इसने धूल मिलाया॥
अरु दया-क्षमा-लज्जा को मार भगाया।
ईश्वर भक्ति का मूल नाश करवाया॥
हैं इसके उपासक रौरव (नरक) के अधिकारी-है यही०॥४॥
यह नवयुवकों को नेन सेन से खावे।
अरु धनवानों को चद्द गद्द कर जावे॥
धन हरण करे अरु पीछे राह बतावे।
करे तीन पांच तो जूते भी लगवावे॥
पिटवा कर पीछे लावे पुलिस पुकारी-है यही०॥५॥
फिर किया पुलिस ने खूब अतिथी सत्कारा।
होगई सजा मिल गया मजा इश्क का सारा॥
जो झूठ होय तो सज्जन करो विचारा।
दो त्याग झूठ करो सत्य वचन स्वीकारा॥
अब तजो कर्म यह अतिनिन्दित दुःखकारी-है यही०॥६॥

इस गजल में इतना स्पष्टी करण किया गया है कि, एक सामान्य समझ वाले को भी यह साफ-साफ मालूम हो जाता है कि वेश्या का प्रसग कितना खतरनाक है, धर्म कर्म से किस तरह हाथ धुला देता है; वेश्या को जोगणी की उपमा ठीक ही दी गई है-

करम फूटी जोगणी । तीन लोक को खाय ॥
जीवित खाए कालजा । मरे नरक ले जाय ॥१॥

वेश्या की प्रीति तो मात्र पैसे की ही सहचारिणी होती है, हरदम किसी को स्मरण में रक्खे, यह तो उसका सिद्धान्त ही नहीं है, परन्तु समय पर उसका बुरी तरह तिरस्कार कर देती है इस पर एक दृष्टान्त देकर चरितार्थ किया जाता है—

किसी एक गांव में एक धनिक रहता था, उसकी पत्नी साक्षात् लक्ष्मी का अवतार थी, पर दौर्भाग्यवश यह एक वेश्या की मुहब्बत में फँस गया था, मौज मजा में धन पूरा किया, स्त्री का ज़ेवर तक भी वेंच दिया, पैसा पूरा होने पर वेश्या ने कहा—महानुभाव ! पैसे

विना काम नहीं चलता, आप कुछ परिश्रम करो । जार पुरुष वहां से रवाना होकर किसी एक स्थान पर ४० चालीस रु० महावार के वेतन पर नौकर हो गया, बचा-बचा कर कुछ द्रव्य इकट्ठा किया, तब अपने एक विश्वासपात्र नौकर को बुला कर कहा—यह डेड़ सौ रू० ले जाओ इसमें से सौ रुपये तो अमुक वेश्या को और ५० मेरी पत्नी को दे देना। वह नौकर पहिले वेश्या के यहाँ पहुँच कर बोला-यह द्रव्य तुम्हारे प्राणवल्लभ ने भेजा है, उत्तर मिला कौनसे प्राण वल्लभ ? नौकर ने कहा—जब आप अपने प्राण वल्लभ को भी नहीं जानती हो तो रुपया पाने के तुम हकदार नहीं, उस पर वेश्या ने ३ फोटो दिखाये, पर अपने मालिक का उनमें फोटो नहीं था, फिर १३ दिखाये, बाद में ५६ फोटो दिखाये, उनमें भी उसके मालिक का फोटो नहीं था, नौकर ने पूछा और बाकी हैं ? वेश्या ने कहा-यों तो मेरी पेढ़ी पर अनेक भड़वे रोते फिरते हैं। यह सुन नौकर लौट गया, अब नौकर ने समझदारी कर तमाम रु० उसकी पत्नी को दे दिये, स्त्री ने बड़ी प्रसन्न होकर पतिदेव की कुशलता पूछी और प्रेम पूर्वक रसीद लिख दी।

वह नौकर रसीद लेकर मालिक के पास पहुँचा, मालिक ने पूछा वेश्या को रु० क्यों नहीं दिया ? उसने सारी हकीकत बताकर कहा-"आप न तीन में न तेरह में न छप्पन के मेरे में" बताईये आप किस पढी के भडवा है वह पुरुष लज्जित हुआ और तब से वेश्या का प्रसंग सर्वथा छोड दिया और अपनी प्रियपत्नी के साथ प्रेममय वर्तन करने लगा। सच है ! कलागारों के सिवा वेश्या संग कौन कर सकता है ? सभ्य और शिष्ट पुरुष तो इससे सदा दूर रहते हैं।

मुमुक्षो ! इस पिशाचिनी के सहयोग से ऐसे-ऐसे अनर्थ पैदा होते हैं कि जो कानों से सुनने योग्य नहीं और सुनने पर दिल बेचैन हो जाता है, नेत्रों में श्रावण भादों बरसने लग जाता है,इस जगत निन्दनीय दुराचार को यहां तक कालिमा लगी है कि एक सहोदर के साथ भाई, पति आदि ६ रिश्ते हुए, इस ही तरह अपनी जननी के साथ ६ रिश्ते हुए, तथा भतीजे के साथ ६ रिश्ते हुए, इस प्रकार तीन जीव के साथ १८ अठारह नाते हुवे, यह सब एक भव की घटना है, यह अठारह नातों का बयान बड़ा विचित्र घटनात्मक और वैराग्योत्पादक होने से यहाँ उद्धृत करते हैं—

अठारह नातों पर—
❀ वैराग्योत्पादक दृष्टान्त ❀

जम्बू द्वीपान्तर गत भरत क्षेत्र में मथुरा नामक एक विख्यात नगर था, वहाँ अनेक राजाओं के परिवार मे शोभित न्यायशील राजा राज्य करता था, वहुत से धर्मानुरागी लोग निवास करते थे, अनेक भव्य जिन मन्दिर अपनी भव्यता से जनता को धर्म पथ में कटिबद्ध करते थे।

उस नगर में कुवेरसेना नाम की वेश्या रहती थी, उपरोक्त व्याख्या से आपको यह ज्ञात हो चुका है कि वेश्या किसी की पत्नी नहीं होती, पशुओं के तुल्य वेश्या के भी कोई रिश्ता नहीं होता।

सज्जनो! एक वक्त वह वेश्या किसी ज़ार पुरुष के साथ काम क्रीड़ा कर रही थी, इससे वह सगर्भा हो गई एक दिन उसके पेट में इतने जोर से पीड़ा होने लगी कि वह वेहोश हो गई, उसकी मां के प्रयत्न से वैद्यों की दौड़-धूप होने लगी, शरीर परीक्षा के पश्चात् यह महसूस हुवा कि इसे कोई अन्य वीमारी नहीं है, मात्र गर्भ के दर्द से दर्दित है, स्वयं ठीक हो जायगा। होश आने पर

उसकी मा ने कहा—बेटी ! यह गर्भ तेरा प्राण घातक है, इसे नष्ट कर देना ठीक है । उसने उत्तर दिया मुझे चाहे जितना कष्ट सहन करना पड़े, मैं अपने गर्भ की पूर्ण रक्षा करूँगी, यह सुन माँ चुप हो गई।

समय पर उसके एक युगल संतान (पुत्र पुत्री) पैदा हुवा, वेश्या अत्यन्त हर्षित हुई, उसकी माता ने एक दिन कहा -यह युगल तेरी कुसुमवत् खिलती हुई युवानी को बिगाड़ने वाला है, अत: इसे नासिका मलवत् त्याग कर दे और आजीविका रूप सम्मस्त युवा अवस्था कायम रख ! इस आग्रह को स्वीकारती हुई दस दिन रखने की माता को प्रार्थना की जिसे उसने मंजूर किया – समय पर उनका नाम "कुबेरदत्त–कुबेरदत्ता" कायम किया, दोनों को अपने अपने नाम की अंगुठियाँ पहना एक लकड़ी की सन्दूक में सुला कर यमुना नदी में बहा दिया—अररर ! उन निर्दयों को जरा भी दया न आई !

अब वह पिंटारा बहता हुवा शौर्यपुर नगर के किनारे पहुँचा, उस वक्त वहाँ दो व्यापारी बैठे थे, उनने देखते उस सन्दूक को इस शर्त के साथ बाहर निकाल ली कि इसमें से जो मिले बराबर बाँट लेंगे, उसे खोलने पर अन्दर एक बच्चा और एक बच्ची कल्लोल करते नजर
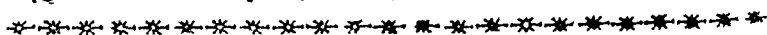
आए, एक ने पुत्र और एक ने पुत्री ले ली, उनका अच्छी तरह पालन-पोषण होने लगा, दोनों ही शिशुवय समाप्त कर युवा अवस्था में दाखिल हुए, उनका समानाकार, सदृश गुण-रूप और लक्षण देख कर तथा परस्पर तीव्र स्नेह जानकर इन साहूकारों ने उनको विवाह कर दिया वे दोनों बड़े आनन्द से रहने लगे।

एक दिन वे दम्पति चौपड़ पासा खेल रहे थे, उस वक्त कुवेरदत्त के हाथ से अंगूठी निकल पड़ी, कुवेरदत्ता ने अपनी अंगूठी से उसका मिलान किया, एकाकार व समान नामवाली देखकर विस्मय को प्राप्त हुई और यह अनुमान लगाया कि बेशक हम दोनों सहोदर भाई बहन हो सकते हैं, इस ही तरह कुवेरदत्त का भी खयाल हुवा, इससे दोनों आत्माएँ प्रस्तुत अनर्थ का भारी पश्चाताप करने लगे और शंका निवारण के लिए अपने मां-बाप के पास जा पहुँचे, माताओं ने अपनी अज्ञानता बताई, पिताओं से सब हाल रोशन हुए, बड़ा भारी खेद हुवा, अब उनकी इस प्रकार परिस्थति बनी

कुवेरदत्त से जनता में होती हुई यह बात सुनी न गई कि बहिन के साथ भाई ने सादी की और पत्नि की तरह उसे सेवन की; व्यापार के बाहने पिताजी की

आज्ञा प्राप्त कर और वहन से सलाह मश्वीरा कर परदेश के लिए रवाना हो गया, योगानुयोग से अपनी जन्म भूमि (Birth Place) मथुरा में पहुँच गया, व्यापार करता हुवा आनन्द से रहता है।

एक दिन कुबेरदत्त शृंगारों से सज्जित अपनी अज्ञात माता कुबेर सेना को देखकर काम विव्हल हो गया, इससे बहुत सा द्रव्य देकर अपनी स्त्री बनाली, उसके साथ भोग विलास करता हुवा लील लहर में रहने लगा, उसके एक पुत्र उत्पन्न हो गया।

उधर वह कुबेरदत्ता अपने जन्म को तिरस्कृत समझती हुई मानव भव को कृतार्थ करने के हेतु अपने माता पिता की आज्ञा लेकर एक विदुषी महत्तरा आर्या के पास भवोद्धारिणी दीक्षा अंगीकार करली, उग्र तपस्या से थोडे ही काल में कर्म पटल को दूर कर तेजोमय अवधि ज्ञान सम्प्राप्त किया, उससे उसने मालूम किया कि मेरा सहोदर भाई अज्ञानवश अपनी माता कुबेर सेना के साथ विषय सुख भोगता हुवा आनन्द मनाता है अतः उसका उद्धार करना आवश्यक है।

गुरुवर्या से आज्ञा लेकर पाँच चार आर्याओं के साथ विहार कर दिया, क्रमशः मथुरा नगरी में पहुँच कर वेश्या के स्थान पर गई, वहाँ रहने के लिए वस्ती (मकान) की याचना की, उसने कहा-मैं वेश्या हूँ, सदा से नीच कर्म करती चली आती हूँ पर कितनेक समय से एक भर्तार के सहयोग से मैं एक कुलीन स्त्री बन गई हूँ, अतः आप मेरे निकट मकान में ठहरिये और हमें सदाचार का उपदेश देकर हमारा उद्धार कीजिये, यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है, आर्याजी ने स्वीकार कर उसके मकान में उतारा कर दिया।

अब वह वेश्या साध्वीशिरोमणी के पास निरन्तर आने लगी, उस लड़के को महासती के सामने लेटा दिया करती, वह बाल क्रीड़ा किया करता और वेश्या धर्मोपदेश सुना करती—एक दिन वह लड़का बड़े हर्ष से खेल रहा था, तब अवसरज्ञा साध्वीरत्न ने भावि सुन्दर फल जान कर इस प्रकार बालक को कहने लगी हे सुन्दर शिशो! तेरे पर मुझे बड़ा प्रेम आता है, चूँकि तेरे मेरे अनेक संबंध रहे हुवे हैं- सुन अब मैं कहती हूँः- कहीं ऐसा भी उल्लेख है कि वह लड़का झूले में सोता हुवा क्रीड़ा कर रहा था, उस वक्त हालरिया (बच्चे

को प्रसन्न करने का एक सरस गायन) के तोर पर आर्यामणि ने अपने नाते प्रकट किये।

> भाई काका पुत्र तू, पोता देवर जान ॥
> सुनरे भतीजे लाडले, नाते कहूँ पखान ॥ १ ॥

हे बालक ! इतना ही नहीं, किन्तु तेरी माता के साथ भी मेरे छः रिश्ते हैं—

> सास बहू दादी लगे, माता भावज जान ॥
> सौत हमारी होत है, नाते कहूँ पखान ॥ २ ॥

हे वत्स ! अपना सम्बन्ध इतने में ही समाप्त नहीं होता, परन्तु तेरे पिता के साथ भी मेरे छ रिश्ते हैं—

> भाई पति दोनो लगे, दादो सुसरा जान ॥
> पिता पुत्र कहरे लगे, नाते कहूँ पखान ॥ ३ ॥

इस तरह प्रतिदिन वह आर्यामणि उस बालक को सरस गायन में नाते सुनाया करती है, एक दिन उस वेश्या ने अपने पति को सब हाल कह सुनाया, कुबेरदत्त ने कहा-अच्छा, कहा मैं गुप्तपना (Secret) से भ्रमण
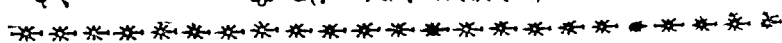
कर इसका निर्णय करूँगा, तू रोजाना के मुताबिक बच्चे को लेकर जाना।

अब यह दोनों दम्पति आश्चर्य समुद्र में गोता लगा रहे हैं और यह इच्छा कर रहे हैं कि कब सूर्योदय हो और हम इस कलंक से मुक्त हों, चिन्ता और विस्मय का सहयोग हो जाने से रजनी का साधारण काल कितना ही लम्बा प्रतीत होने लगा; यह तो प्रकट ही है कि जब आदमी किसी दुःख से दुःखी होता है, तब उसको स्वल्प काल बिताना भी भारी मुश्किल होता है, खैर किसी कदर उनने रात पूरी की।

दूसरे दिन आफताफ के रोशन होते ही वह वेश्या अपने लड़के को लेकर नियम पूर्वक आर्याजी के स्थान पर पहुंची, इधर वह कुबेरदत्त भी किसी पोशीदा जगह पर जा खड़ा हुवा, उस लेटे हुवे बच्चे को वह महासती उसही तरह हालरिया सुनाने लगी, सुनते ही कुबेरदत्त बाहर आकर लाल पीला होता हुवा साध्वीरत्न को इस प्रकार कहने लगा—

हे आर्ये! आप इस कदर निर्मूल-अघटित और अयुक्त मिथ्या कलंक से हमें क्यों कलंकित करती हो?

क्या त्यागी वर्ग ऐसा कर सकता है ? तुमको रहने को मकान दिया उसका बदला चुका रही हो ? ऐसे मिथ्या बकवाद से आप को लज्जा आनी चाहिए।

उन आर्याजी ने गम्भीरता से उत्तर दिया-महानुभाव! जरा शान्त हो, धैर्य धारण करो। त्यागी वर्ग कण्ठगत प्राण होने पर भी कभी मिथ्या भाषण नहीं करते; मैंने जो अठारह नाते कहे हैं वे सत्य हैं और युक्ति युक्त हैं, तुम सावधानता से श्रवण करो-

❀ अठारह नातों का स्पष्टीकरण ❀

(बालक के साथ छः नाते)

पूर्व का सब वृतान्त कहने के पश्चात् आर्याजी ने इस प्रकार कहा-१ जिस वेश्या से मेरा जन्म हुवा है, उसही से इस बालक का भी जन्म हुवा है; अतः यह मेरा भाई होता है-२ तुम इस वेश्या के पति हो, इससे मेरे पिता हुए और तुमारा और इस बालक का इससे जन्म हुवा, वास्ते परस्पर भाई होने से यह बालक मेरा काका हुवा—३ तुमने मेरे साथ शादी की और इस वेश्या को पत्नी बनाई, हम परस्पर सौत (सौक) होने से यह बालक मेरा सोतेला पुत्र हुवा-४ इस ही वेश्या
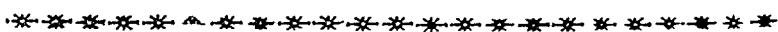
के तुम पुत्र हो और यह तुम्हारा लड़का है, लिहाज़ा यह लड़का मेरा पौत्र (पोता) हुवा—५ तुम मेरे पति थे और यह तुमारा छोटा भाई है, इसमे यह बालक मेरा देवर हुवा—६ अपन दोनों इस वेश्या से पैदा हुए और यह तुम्हारा लड़का है, इसलिए यह बालक मेरा भतीजा होता है।

वेश्या और वेपारी स्तब्ध हो गये और अन्य नाते जानने की प्रतीक्षा करने लगे, इतने ही में महासती ने आगे कहना शुरू किया—

(वेश्या के साथ छः नाते)

१ तुम मेरे पति थे और यह तुमारी माता है, अतः यह वेश्या मेरी सास होती है-२ यह मेरी सपत्नी है और इस ही के तुम लड़के होने से मेरे सौतेले पुत्र होते हो और यह तुमारी पत्नी होने से मेरे पुत्र वधू (वहु) हुई-३ तुम मेरे पिता होते हो और यह तुमारी माता है, अतः यह वेश्या मेरी दादी हुई-४ यह मेरी जन्म दातृ है, वास्ते मेरी माता हुई—५ तुम मेरे सहोदर भाई हो और यह तुमारी स्त्री हैं, लिहाजा मेरी भावज़ (भोजाई) हुई—६ तुमने मुझ से विवाह किया और इस वेश्या को स्त्री कायम की, इससे यह मेरी सौत हुई।

यह सुन कर दोनों व्यक्तियों के मानों जमीन पर पैर चिपक गये और शेष छ. नाते सुनने की भारी तमन्ना जागी, इतने में ही महादेवी बोली—

(सेठ के साथ छ. नाते)

१. अपन दोनों एक जननी से जन्मे, इससे मेरे भाई हुए। २ तुम्हारा मेरा विवाह हुवा, इससे मेरे शौहर (पति) हुवे। ३. तुम्हारा लड़का मेरे काका होता है और तुम उसके पिता हो, अतः मेरे दादा हुवे। ४ यह वेश्या मेरी सास है और तुम उसके पति हो, वास्ते मेरे स्वसुर (सुसरा) हुवे। ५. मैं इस गणिका की लड़की हूं और तुम इसके पति हो, वास्ते मेरे पिता हुवे। ६ मैं और वेश्या परस्पर सौतें है और तुम इसके पति हो, लिहाजा मेरे सौतेले पुत्र हुए।

यह सुन कर दोनों के जीवन में सन्नाटा खेल गया, बोलने योग्य न रहे, लज्जा से मस्तक नीचे झुक गये- एक भव में तीन जीवों के अठारह नाते सचमुच ही दुर्व्यवहार की चरम सीमा है-समय की अनुकूलता देख महासती ने इस प्रकार बोध दिया—

अनित्यानि शरीराणि । विभवो नैव शाश्वतः ।
नित्यं संहरते काल – स्तस्माद्धर्मं समाचरेत । १।

भावार्थ—शरीर अनित्य है, सदा नहीं रह सकते वैभव शास्वत कायम नहीं रह सकता यानी धन-धान्य-कुटुम्बादि विनश्वर हैं, काल हमेशा हरण करता है, अर्थात् मृत्यु निरन्तर नजदीक आती है: इसलिये धर्म की आचरणा करो, यानी धर्म की आराधना करो ।

व्याख्या–यह शरीर नाशवान है, चाहे जितनी इसकी हिफाजत की जाय वा शृंगारा जाय–खिलाया पिलाया जाय, न्हिलाया धुलाया जाय, चोला पचोला जाय, वस्त्राभूषणों से सजाया जाय, और फूंक दे दे कर रुई के पेल में आराम से पाला जाय, तब भी यह समय पर ढीठा बनकर काम नहीं देता, व्रत–यम–नियम तपस्या और त्याग के समय खिसक जाता है, सेवा करना तो मानो इस पर वज्रपात होता है, सुस्त बनकर खाना-पीना, फिरना डोलना ही इसे रुचिकर है, अतः मनुष्य को चाहिये कि इससे सेवा कार्य और तपादि कर्म अवश्य कराये जांय; इस ही तरह वैभव भी नश्वर है--धन,

धान्य, मकान, हाट, हवेली, जमीन, जायदाद आदि स्थावर मिल्कियत और स्त्री, पुत्र पौत्रादि परिवार, सगे, सम्बन्धी, ज्ञातीय, गोत्रीय, मित्र प्रेमी और इतर सब जंगम मिल्कियत नाशवन्त है, इससे मोह कम कर इनका सदुपयोग करना चाहिये, वर्ना क्रमश: इन सबका नाश हो जाना है, ऐसे लाखों दृष्टान्त बांचे हुए, सुने हुए, और नजरों में गुजरे हुए महसूस होते हैं, इधर काल कराल निरन्तर मुख पसारे हुवे खड़ा है और प्रति क्षण यह प्रतीक्षा कर रहा है कि इस पर चला जाऊं, मतलब कि दिन ब दिन उम्र कम होती जाती है, इसलिये धर्म का आराधन करो, सच्चा सहायक और रक्षक एक मात्र धर्म ही है, वह धर्म अहिंसामय, संयमयुक्त और तपस्या सहित हो, यही धर्म संसार का तारक धर्म है, इसे विचार वाणी और वर्तन से अपना कर श्रेय मार्ग पर विचरो।

अहो सेठ! तुच्छ वासना के कारण तुम लोगों से कितना अनर्थ हुआ है! इसे सोचो समझो और अपना उद्धार करो-यह सब सुनकर सेठ और वेश्या के नेत्रों में से अविरल धारा आंसू बहने लगे और दीनमुख होकर इस तरह रोते रोते यानी उद्धार मार्ग की भिक्षा मांग रहे हैं।

उनकी प्रार्थना पर महासती ने पाप निकन्दन के लिये संयम ग्रहण करने का उपदेश दिया, दोनों ही व्यक्तियों ने चारित्र अंगीकार कर लिया—कहीं ऐसा भी उल्लेख है कि वेश्या ने श्रावक व्रत अंगीकार किये—दोनों ने उग्र तपस्या कर अपना मानव जीवन सार्थक किया।

वह साध्वी शिरताज अपने गुरुवर्या के पास वापस चली गई; अन्त में तीनों ही भव्य शुभकरणी करके सद्गति को प्राप्त हुएँ—धन्य है ! उपकारक शिरोमणि साध्वी-रत्न को और धन्य है ! उन दोनों आत्माओं को ! क्या आप भी इस शिक्षाप्रद पाठ से कुछ सीखेंगे ? कहिये कि अवश्य सीखेंगे।

ऊपर के दृष्टान्त से आपको महसूस हो गया होगा कि वेश्यागमन से कितना अनर्थ पैदा होता है, इसका त्याग करने से आप हर तरह अपनी रक्षा कर सकेंगे।

—:-०-:—

कई महानुभाव यहां ऐसा प्रश्न करते हैं कि वेश्या गमन में तो दोष है पर वेश्या के नचाने में या उसका नाच देखने में तो कोई हानि नहीं है ? यह तो वैसा

प्रश्न हुआ कि चोरी करना तो बुरा है पर डाका डालना तो बुरा नहीं ? अहो सज्जनो ! यह तो उसका भी गुरु घण्टाल है, वेश्या गमन के उत्पत्ति का एक मुख्य कारण है।

वस्त्र और शृंगार सज कर वेश्या जब नृत्य करती है, तब हाथ पैर आँख मुहादि से इस प्रकार लटके करती है और शृंगारिक गायन इस कदर गाती है कि श्रोताजन मुग्ध हो जाते हैं और काम की झोल उछलने लगती है, इसम आखिर व्यभिचार सजन करने लगता है, अत: यह सिद्ध हुआ कि नृत्य कराना या देखना, अग्नि को न्योता देना और टा जिमाना के बराबर है।

कई एक रईस, अमीर और शौकीन दरबार में, शादी में जा महफिल में वेश्या का नाच करवाते हैं, उस से द्रव्य नाश के साथ अपना और दर्शकों का भारी अहित करते हैं मानो व्यभिचार का मार्ग खुल्ला करने का यश प्राप्त करते हैं, समझदार लोग तो इस कर्त्तव्य को धिक्कारते ही हैं: परन्तु नृत्य के समय बजते हुए तबले सारंगी भी धिक्कार देते हैं :—

सुकाज को छोड़ कुकाज करें।
　　धन जात है व्यर्थ सदा तिनको ॥
एक रांड बुलाय नचावत है।
　　नहीं आवत लाज जरा उनको ॥१॥
मृदंग कहे धिक् है धिक् है।
　　सुरताल पूछे किनको किनको ॥
तब उत्तर रांड बतावत है।
　　धिक है इनको इनको इनको ॥ २ ॥

देखिये इस कुत्सित कर्म के लिये जीवाजीव दोनों धिक्कारते हैं, अब तो शायद दर्शकों को जरूर शर्म आयगी—आप यदि वेश्यागामी हैं, या नृत्य देखने के शौकीन हैं तो उपर की परिस्थिति पर पूरा विचार करें और आज ही प्रभु की साक्षी से प्रतिज्ञा करलें, जिससे आपकी निरन्तर उन्नति होगी।

—×—×—

❋ पाँचवाँ व्यसन शिकार ❋

किसी पशु पत्ती या जलचर प्राणी को बन्दूक, तमचा, भाला, तीर किंवा गोफनादि शस्त्र से क्रीडा के खातिर या कौतुक के लिए या मांस भक्षण के वास्ते अथवा अन्य ऐसे ही कारणों को लेकर मारना 'शिकार' (Hunting) या शिकार खेलना कहा जाता है।

बेचारे निरपराधी सिंह नाहर चिते-हरीन खरगोश सियाल रींछादि जानवरों का तथा कबूतर मोर पपैया चकवा सुआ आदि पत्तियों का एव मगरमच्छ मछलियें-काछवा मेंडक और अजगरादि जलचर जीवों का पापी शिकारी शिकार करते हैं, ये लोग उसमें अपने को बहादुर समझते हैं पर उनको यह पता नहीं है कि ऐसा काम तो कोली, भील, घांची, मोची आदि भी कर सकते हैं, तो फिर सब बराबर बहादुर हुवे ? अनेक लोगों की सहायता लेकर बड़ा आदमी अपनी बहादुरी बताने में जरा भी शरमाता नहीं है, यह शर्म की बात है।

अहिंसा के उपासक हिन्दु मुसल्मीन और क्रिश्चिन भाइयों से मैं पूछता हू कि आप ईश्वर, खुदा या ईसा

सब जीव में मानते हैं तो फिर यह स्पष्ट हो है कि ईश्वर ईश्वर को, खुदा–खुदा को और ईसा–ईसा को मारता है क्या यह न्याय संगत है ? अपने स्वार्थ के खातिर, कुतुहल और कल्लोल के कारण पशु आदि का शिकार करना घोर अन्याय है, यह तो चाह कर दोजख-नरक (Hail) के बन्द दरवाजों को खोलना है।

हिंसक लोगों की यह एक बड़ी विचित्र दलील है कि हिंसक और जहरी जानवर मनुष्यों को कष्ट पहुँचाते हैं, अतः उन्हें मार देना पुण्य में शुमार है, क्योंकि उनको मार देने से लोग निर्भय हो जायंगे और आराम से रहने लगेंगे–उत्तर में निवेदन है कि अव्वल तो वे महत्कारण बिना (अपनी रक्षा के सिवा) किसी को सताते ही नहीं हैं—सिंह–चितादि जब आफत में फँस जाते हैं तब मनुष्यों पर झपटते हैं, नहीं तो अपने रास्ते रास्ते चले जाते हैं; तथा सर्प-बिच्छू आदि जब स्वयं कहीं दब जाते हैं या कष्टाभिभूत हो जाते हैं तब डंक मारते हैं, नहीं तो पानी के प्रवाह की तरह चले जाते हैं; इस उपरान्त भी थोड़ी देर के लिये मान लीजिये कि कोई बिना ही कारण अपने को हरकत करते हैं तो क्या उनको मार देने से वैसे जानवरों से संसार खाली हो जायगा ? और इससे

विश्व में शांति हो जायगी क्या ? बन्धुओ ! ऐसा कभी न होगा, उनका कर्त्तव्य वे करते रहें, हमारा रक्षण कर्त्तव्य हमें करना चाहिये।

छोटे शिकारी तो मच्छर, मक्खी, खटमल, पिस्सू, डाँस, जूं और जूँ-लीख को भी शिकार अंगुलिया से कर डालते हैं, उनका कथन है कि ये मनुष्यों को दिन रात तकलीफ पहुँचाते हैं, इनको मार देने से पुण्य होता है और आदमियों की तकलीफें रफा हो जाती हैं-यह मान्यता सचमुच ही अज्ञान दशा की एक जाहिरात है, कारण कि जिनका खुराक ही प्रायः मनुष्यों के शरीर हैं, उसमें उनका क्या गुनाह है ? उनका स्वभाव ही ऐसा है। तो अपनी रक्षा के लिये अन्य उपाय करना चाहिए, पर उनको मार कर एक अनर्थ कर्तव्य का परिचय न देना चाहिये।

जैन और हिन्दू तो क्या पर मुसलमीन धर्म भी अहिंसा का पुजारी है, हिंसा में पाप मानता है और उस को रोकने का आदेश करता है देखिये—

सुना जाता है कि हज़रत महम्मद पैगम्बर ऐसे दयालु थे कि कोई उनके तमाचा मार देता तो हंस कर दूसरा गाल उसकी तरफ कर देते, ऐसे दयालु पुरुष कभी हिंसा का उपदेश दे सकते हैं ? कदापि नहीं।

मौलाना हुसेनबीन अलीनल-एक उलका सेफी के वचनामृत हमें यकीन दिलाते हैं कि वे अवश्य दयावन्त थे। उनका कथन है कि खुदा ताला की घोषणा है कि--

(१) अगर तू दूसरे जानवरों पर रहम दिखाएगा तो तेरे पर मेरी रहम नज़र होगी।

(२) अपने वदन को रहम-दया की पौशाक से ही खूबसूरत बनाने की जरूरत है।

(३) जिसने रहम का झंडा उठाया, उसने अपना और लोगों का काम फतेह पर पहुँचाया ही समझना।

(४) जो रहम के लिये उम्दा साबित हुआ, उस पर नसीब की आँख खुल्ली समझना।

(५) परलोक का सुख और इस लोक की सलामती रहम नज़र पर ही अवलम्बित है।

(६) अपने आधीनों की हर हमेशां फिक्र रखना चाहिये, जिनको दिल दुःख-दर्द और अफसोस से पीडित हों, उन पर दया भाव अवश्य रखना चाहिये।

(७) अगर तू दूसरे पर क्षमा करेगा तो तुझको भी क्षमा बक्षो जायगी, जिससे तेरे लिये अदृश्य स्थान मोक्ष का दरवाजा खुला हो जायगा।

अगर मेरी रहम की तुझे चाहना हो तो तू दूसरे पर रहम नजर रख ! मुसल्मानों में जो बड़े बड़े आलिम फाजिल हो गये है, उनने भी दया का अपनाया है, उन ने अपनी कविताओं में अच्छा प्रकाश डाला है :—

❀ इस्लामी मज़हब के फरमान ❀

इस्लामी मजहब फरमावे ।
चींटी को नहीं मारो ॥
दलुचन हित नित हरेवृक्ष की।
डाली को न विदारो ॥ १ ॥
रोज़े अरु रमज़ान ईद दिन ।
दारू मास स्त्री सोबत ॥

सच्चे दीन कभी नहीं सेवत।
हराम गिनी त्यागत ॥ २ ॥
पैगम्बर साहब का हुक्म है।
रहम रक्खो सब जी पर ॥
रहम भयो सो हो रहीमान।
रब मालिक, गरीबपरवर ॥ ३ ॥
पीर औलिये जो जो हुवे हैं।
वे सब आमिष त्यागी ॥
तब बकरे को कुरबानी का।
हुक्म क्यों करत सुभागी ॥ ४ ॥
साहब हजरत अली खलीफे।
मिसरा कहते हैं ओ नर ॥
पशु पक्षी के पेट बीच में।
कभी कबर तू ना कर ॥ ५ ॥
सुवक्त गिन शिकार को अन्दर।
रहम हिरनो पर लाया ॥
अल्लाह ने उसे उसी रहम से।
बादशाह बन वाया ॥ ६ ॥
धर्म शास्त्र में बहुतेरे हैं।
ऐसे वचन तथापि ॥

ये रहम दिल करके कोई ।
मारन ? जीव अधापि ॥ ७ ॥
कवि कहत है सुनिये गुनिजन ।
धर्म वचन सरदह कर ॥
कुल जीवा का जान बचाओ ।
रहम हमेशा रख कर ॥ ८ ॥
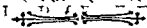
रहम जो करता है बदला, रहम का वह पायगा।
जुल्म करता है तो बदला, जुल्म का मिल जायगा॥
रहम जालिम पर कर गर पाक रब्बुल आलामीन।
जुल्म फिर मजलूम के हक में उरा होजायगा रहम०॥१॥
बख्श दे अपना गुनाह हक पर नहीं हकुल इबाद।
यह कहा किसने तुझे, जालीम भी बख्शा जायगा॥
माफ तो याह मे करें हक, शीर्कसा जुल्म न आजीम।
हक मगर बन्दे का वह, बख्शे तो बख्शा जायगा रहम०॥
जुल्म का ताजीर राह सांको जमा गाह सान है।
पेड़ बबुलों के बोकर, आम क्यों कर खायगो॥
नेकी पे मजलूम कू जालिम, कि दे दावर जरूर।
सब गुनाह मजलूमे हक, जालिम के सर उठवायेगा रहम

चन्द रोजा है इस दुनिया में जिन्दगी जिस पर।
निशाने की का जमाने से मिटाते न चलो॥
खुदा का खोफ करो कुछ भी तो दिल में यारो।
इश्क से खाक में बन्दों को मिलाते न चलो॥३॥
अल्ला मालिक ने किया आपको हुस्ने दौलत।
गजब की चाल से गरदुं को हिलाते न चलो॥
वक्त बदल अब जाता है कमालो ने को।
रुबाहिसे नफस में जिन्दगी को गंवाते न चलो॥४॥

उपर्युक्त कविताएँ से आपको बोध होगया होगा कि महमडन धर्म में दया को कितना ऊँचा स्थान है; आशा है मुसलमान भाई और अन्य जनता इस पर गौर कर अहिंसा के भक्त बनकर उससे लाभ उठावें

इतना ही नहीं, इंग्लिस्तान में निवास करने वाले लोगों ने भी जीवदया को अच्छे ढंग से स्वीकार की है, यद्यपि वे अधिक तर हिंसक हैं, तदपि उनमें कई समझदार लोग बड़े धर्म निष्ठ हैं, उनके सद् विचारों की द्योतक लाँगफेलो की निर्मित निम्नाङ्कित एक कविता पढ़िये—

Turn turn thy hasty foot aside
Nor crush that helpless worm
The frame thy scornfull thoughts deride
From God received its form (1)

The common lord of all that move
From whom thy being flowed
A portion of his boundless love
On that poor worm be stowed (2)
The sun the moon the star he made
To all his creatures free
And spread over earth the grassy blade
For worm as well as thee (3)
Let them enjoy their little day
Their humble bless receive
Oh ! do not lightly takeaway
The life thou canst not give (4)

(Long fellow)

भावार्थ—ऐ चलने वाले ! तेरा फुरतिला पेर
एक तरफ हटा, उस असहायक कीड़े को न कुचल, जिस
शक्ल पर तेरे घृणित ख्याल होते हैं, वह शक्ल भी पर

मात्मा से प्राप्त हुई है। १ तमाम प्राणियों का स्वामी (परमात्मा) जिससे कि तेरी आत्मा भी हुई है, उसने अपने अपार प्यार का हिस्सा उस बेचारे कीड़े को भी दिया है। उसने सूर्य, चन्द्र और तारे बनाये हैं और अपने तमाम प्राणियों को आज़ाद किये हैं तथा पृथ्वी पर हरी सब्जी फैलाई है, कारण कि उसके लिए तू और कीड़ा बराबर है। ३ उन बेचारों को उनके थोड़े से दिन आनन्द पूर्वक बसर करने दे, और उनका थोड़ा सुख उन्हें प्राप्त करने दे; अरे! और जिस जान को तू नहीं दे सकता, उसे महज़ ही मत लेले। ४

(लॉंग फेलो)

इस पोयट्री से यह सिद्ध होता है कि युरोपियन भी कितने दयालु होते हैं; क्या क्रिश्चिन भाई इससे बोध पाठ शीख कर हिंसा का त्याग करेंगे? आशा की जाती है कि जरूर अहिंसक बनेंगे।

सगर्भा हिरणी के शिकार के महत्पाप के कारण मगधाधीश्वर महाराजा श्रेणिक को नरक में जाना पड़ा, यद्यपि वे पीछे से बड़े धर्मात्मा हो गए थे फिर भी कृत-पाप भोगने के लिए एक बार जाना पड़ा, तो क्या कर्म-

राज अन्य हिंसक शिकारियों का झाड देगा ? हरगीज नहीं ! हिंसा से मुक्त प्राणी दैविक सुख को प्राप्त करते हैं। कहा गया है कि—

मर्व हिंसा निवृत्ता ये। ये च सर्वं सहा नरा. ॥
सवस्याश्रय भूताश्च । ते नरा. स्वर्गगामिनः ॥१॥

भावार्थ—जो मानव सर्व हिंसा से मुक्त हैं और सर्व महन करने वाले हैं तथा सर्व के आधार भूत हैं, वे मनुष्य स्वर्गगामी हैं।

तम तो निश्चय हुवा कि "आत्मवत् सर्वभूतेषु य. पश्यति स पंडित." अर्थात् तमाम आत्माओं में अपनी आत्मा के तुल्य जो देखता है वह पंडित है, अर्थापत्ति न्याय से शेषामूर्खारिति, बाकी के सब मूर्ख हैं, यह अर्थ सिद्ध होता है।

इसको समझने के लिए सबसे सरल न्याय यह है कि अपने कोइ चपेटा चढादे या हन्टरों से पीटे वा प्राण लेवे तो कितना कष्ट होता है, बस ठीक उसी तरह प्रत्येक

प्राणी को होता है, इसलिए शिकारादि किसी तरह भी हिंसा का सर्वथा त्याग होना चाहिए। महात्मा गान्धी के कमान्ड में अहिंसा का युद्ध भारत में भारी जोरों से चल रहा है, उसके अन्तःस्थल में एक अनोखा प्रकाश है, जिसको जानने वाले स्वल्प संख्या में हैं। अहिंसा का पूर्ण दावा करने वाले जैन भाई और इतर अहिंसक धर्म के उपासक किस स्टेज़ पर खड़े हैं, इसे जरा सोचें समझें और देश की अहिंसक सेवा में जुट जांय यह ऐच्छ-नीय है।

ऊपर के सारे प्लाट को बाँचने से आपको मालूम हो गया होगा कि शिकार खेलना कितना घातक व्यसन है, दयादेवी का साम्राज्य समूल नष्ट करने वाला है, अतः धार्मिक नैतिक और शिष्ट परंपरा से भी यह सम्पूर्णतः त्याग है, आप यदि शिकारी हों तो परमात्मा की साक्षी से आज ही शिकार खेलना त्याग कर अपना कल्याण करें और अन्य को समझा कर त्याग कराने में प्रयत्नशील बनें।

———

❀ छट्ठा व्यसन चोरी ❀

डाका डाल कर, खात पाड कर, खीसा काट कर, गांठ छोड कर, उठाईगिरी से, देखते या पोशीदा आदि तरीकों से अल्प मूल्य या बहुमूल्य जीवधारी वा अजीव वस्तु मालिक की आज्ञा बिना ले लेना 'चोरी' (Theft) कही जाती है।

चोर लोग यह समझते होंगे कि मुफ्त का माल ला कर मौज मजा उडावेंगे और शायद ऐसा करते होंगे, पर मालूम होता ही सतर्क पुलिस उसके पीछे घूमा करती है और आखिर पता लगा कर उसे हिरासत में ले लेती है, काठ में धर देती है, मुकदमा चलता है और उसे छ मास, वर्ष भर, या दो पांच वर्ष जेल में बन्द कर दिया जाता है, वहां उससे पानी खींचने का, बाग साफ करने का, लकडी काटने का, गट्टी फोडने का, सडक कूटने का चरखी चलाने का, बोझा उठाने का और ऐसे अनेक कठिन काम कराए जाते हैं, और बक्कन-फक्कन बेंतें लगाई जाती हैं, पैरों में सांकलवाली या कडेवाली

बेड़ियाँ पहनाई हुई होने से भाग नहीं सकता, दौड़ नहीं सकता, जल्दी और आराम से चल नहीं सकता, वह वहाँ बड़े कष्ट से दिन गुजारता है, उस वक्त संभवतः यह सोचता होगा कि अब ऐसा कभी न करूंगा, पर जेल से छुटने के बाद फिर वही बात, इस तरह नैन्दनीय जीवन वह पूरा करता है।

चोरी का माल घर में रह नहीं सकता, भयभीत होने से आराम भी नहीं पा सकता, और आखिर किसी तरह चोरी का माल होली की तरह नाश हो जाता है।

चोरी कर होरी धरी। भई छिनक में छार।
तुलसी माल हराम को। जात न लागे बार॥१॥

चोरी करने वाला चोर, उसका सलाहकार, सहायक और चोरी का माल मोल लेने वाला या सम्भालने वाला, सब गुन्हेगार होते है, उन सबों को सजा होती है, सर्व पाप की आचरणा करने वाले पापी समझे जाते जाते हैं-धन, वस्त्र, जेवर, सुवर्ण, रजत, बरतन, बिस्तर, लकड़ी, छत्ता, जूता, कागज, कलम, पुस्तक, शाक,

भाजी, फल फूल, अनाज, दूध, दही, घी, गुड, शक्कर, आटा, दाल आदि समस्त अजीव पदार्थ और बालक, स्त्री, ऊंट, घोडा, हाथी गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता, तोता, कबूतर, मैना, दास, दासी इत्यादि समग्र जीव पदार्थों की छोटी या बडी किसी किस्म की चोरी इज्जत को बिगाडने वाली है, पाणिशन नाश करने वाली है, जेल में पहुँचाने वाली है और कठिन यातनाएँ देने वाली है, अन्तिम दुगति को पहुँचाने वाली होती है।

यों तो ससार भर में आजन्म चोरी से कोइ नहीं बचा होगा, ऐसा प्रतीत होता है और वाके ऐसा हो सकता है, इस पर एक सुन्दर दृष्टान्त दिखाते हैं–

किसी एक नगर के राजा ने चोरी के अपराध में एक चोर को फाँसी का हुक्म दे दिया, समय के पहिले चोर को पूछा गया तुम क्या चाहते हो ? उसने कहा— श्री दरबार के दर्शन करने की अभिलाषा है, सेवकों ने आज्ञा प्राप्त कर उसे राजा के पास पहुँचा दिया–इस वक्त कइयों ने खयाल किया होगा कि यह माफी माँगेगा,

लाचारी करेगा, खुशामद करेगा, दया की भिक्षा मांगेगा, पर ऐसा कुछ न हुआ-राजा ने पूछा क्या चाहता है ? उसने कहा —हुजूर ! मैं अपने अपकृत्यों से मरता हूं, इसका तो मुझे कुछ दुःख नहीं है, परन्तु मरते दम दिल में मात्र एक खटका रह जाता है, वह यह कि—सोना उत्पन्न करने की खेती मैं जानता हूं, मैं चाहता हूं कि किसी को शिखला कर मरूं तो ठीक है; यह बात सुनकर राजा खुश-खुश हो गया, और फरमाया कि यह खेती मुझे शिखा दे, उसने कहा—जमीन विदारण कराकर नवीन खेत तैयार कराईये और खात-मिट्टी डाल कर कम्पलीट (पूरा) कराईये, फिर उसमें सुवर्ण वेल के बीज बोए जांयगे उससे मनोवंद सोना पैदा हो जायगा । राजा ने फाँसी का हुक्म स्थगित (Postpone) किया, और तैयारी करने की आज्ञा दी, धमधोकार काम चला, खेत तैयार हो गये । राजा, प्रधान मण्डल, सेनापति, कर्मचारी सेठ, साहुकार और प्रजाजन के अगणित लोग उस नवीन खेतों के सामने विशाल मैदान में पहुँचे, चोर भी वहाँ पहुँच गया, देखिये अब वहाँ क्या मज़ा आता है-

चोर सबके बीच में खड़ा हो गया, हजारों आँखें उसको निहारने लगी, उसने अपने खीसे में से बीज निकाले, हथेली में लेकर बड़े गौर से देखने लगा, महीन महीन काले बीज थे, जंगली घास के बीजों की तरह नजर आते थे, मुट्ठी बंदकर फिर खोली, इस तरह तीन बार किया, आखिर राजा साहब ने पूछा—क्या सोच रहा है। उसने कहा—मेरे नसीब को रो रहा हूँ, नृपेन्द्र ने कहा—क्या बात है ? बड़ी महनत से मैंने यह विद्या सीखी, परन्तु मैं चोरी करता हूँ इससे ये बीज मेरे बोए हुए उग नहीं सकते, जिसने कभी चोरी न की हो वह बो दे तो सोना ही सोना हो जायगा, चारों तरफ निगाह डाली, पर कोई हिम्मत करके आगे न बढ़ा, वहाँ बड़े बड़े आदमियों को पूछा गया, मगर किसी की हिम्मत न हुई, आखिर लाचार होकर चोर ने नरेश को कहा—हजूर अब तो आप श्री को ही बीज बोना पड़ेगा, राजा सा० ने सोचा "छोटी-छोटी चोरियाँ तो मुझ से भी बनी हैं" और कह दिया भाई ! मैं नहीं बो सकता, चोरी से मुक्त मैं भी नहीं हू, चोर ने निवेदन किया—

महाराज ये हजारों लोग चोर हैं, इनको कुछ सज़ा नहीं और मुझको फाँसी की आज्ञा ? राजा सा० निरुत्तर हो गये और उसको फाँसी की सज़ा माफ कर दी।

इससे यह साबित हुआ कि संसार में सब चोर हैं, पर यहाँ उस चोरी का निषेध किया जारहा है जिसको राज दण्डे और लोग भण्डे यानी राजा सजा दे और लोग निन्दा करें।

साहित्य चोरी भी एक ज़बर चोरी है, दूसरे की बनाई हुई वस्तु पर अपना या दूसरे का नाम लगा देना, लेखों को घिसवा कर दूसरे नाम लिखा देना, कम जोर-बुद्धि हीन, नामवरी का गुलाम तो यह काम करता ही है, पर त्यागी नाम धरने वाले साधुजन भी ऐसा अकृत्य करते नज़र आते हैं।

चोरी करने वाला चोर हिंसक-व्यभिचारी-घातकी और निर्दयादि अनेक दुष्ट कर्म करने लग जाता है, पशु-हत्या, बालहत्या, स्त्रीहत्या, राजहत्या, ऋषीहत्यादि सब निःसंकोच करने लगता है, दया और ब्रह्मचर्य तो

मानो उसके जीवन में से ही समूल नष्ट होगये मालूम होते हैं।

चोर लोग कदाचित यह समझते हों कि चोरी के धन में से थोड़ा धन सुकृत में लगाकर पापों से मुक्त हो जायगे, मगर ऐसा कभी न हो सकेगा, दकीला अनाज जिस तरह अहान में नहीं उग सकता, उस तरह चोरी का अन्याई पैसा धर्म क्षेत्र में नहीं उग सकता, यानी फल-प्रद नहीं हो सकता।

मा-बाप की लापरवाही से बचपन में ही बच्चे चोरी करना शीख जाते हैं, घर में पैसा-वस्त्र-पान-अनाजादि चुरा कर ले जाते हैं, मां बापों को मालूम हो जाने पर या किसी की शिकायत पर 'बच्चा है बच्चा' यह कह कर टाल देते हैं, इससे परिणाम यह आता है कि बड़ा होने पर दूसरों के वहाँ चोरी करता है और समय पर एक बड़ा डाकू बन कर डाका डालता है, इसलिये माँ बापों को चाहिए कि वे बच्चों को पहिले से कब्जे में रक्खें।

चोरों को यह सदा सन्देह बना रहता है कि किसी

दिन में अवश्य पकड़ा जावेगा और बड़ी दुर्दशा होगी, इससे खाना-पीना-पहनना-ओढना में ज़रा भी लुत्फ नहीं आता, रात दिन कलेजा धड़कता रहता है, चित्त पर ग्लानी रहती है; और अन्त में वही होता है, इससे भारी परेशानी उठानी पड़ती है।

धर्म शास्त्र में पैसे को प्राण का प्रतीक समझ कर ग्यारहवाँ प्राण मान लिया है कि प्राणों के नाश से जो दुःख होता है; वही धन के अपहरण से हो जाता है, इसलिये अहिंसा वादी को चोरी का त्याग करना चाहिए।

चोरी का उत्कृष्टतः त्याग करने वाला और उसके मर्ज को समझने वाला महावीर शासन में एक श्रावकरत्न पोणिया श्रावक था—करीब ढाई हजार वर्ष पहिले भगवान् महावीर का परमोपासक पोणिया नाम का श्रावक निरन्तर सामायिक (समता भाव प्राप्त करने का एक धर्मानुष्ठान) क्रिया करता था, वह दो घड़ी (४८ मिनिट) एकाग्र चित्त बन जाता था, एक दिन सामायिक में चित्त स्थिर न हुवा, बहुत प्रयत्न करने पर भी असफलता रही,

क्रिया से निवृत्त होकर अपनी-पत्नी के पास पहुँचा, मलिन मुख देखकर उसने पूछा— आज आप उदास क्यों हैं? उसने सामायिक अनुष्ठान बिगड जाने का जिक्र किया और यह कहा कि अपनी कोई भारी भूल हो गई है, परस्पर शिष्टाचार से काफी विचार किया; आखिर स्त्री ने कहा-स्वामिन्! कल मैं पड़ोशन के यहाँ अग्नि लेने गई थी, जल्दी के मारे उसही के कण्डे में आग लाकर चूल्हा सिलगाया और भोजन बनाकर आपको जीमाया, उसमें गड बड हुई हो तो मैं नहीं कह सकती, पोणमिया ने कहा-बिलकुल ठीक है यही हुवा, बिना पूछे छाने का टुकडा लेने का तुम्हें क्या हक था? यह चोरी हुई और सारे भोजन में उसका असर पहुंच गया तथा भोजन का असर मन पर पडा और इस ही से चित्त डावाडोल हो गया, प्रयत्न करने पर भी स्थिर न हुवा आइन्दा पूरा ध्यान रखना, नतमस्तक हो उसने स्वीकार किया-देखिये चोरी का सच्चा और पक्का त्याग इसको कहते हैं। -

कोई भी ज्ञानी पुरुष चोरी को अच्छा नहीं समझता,

उसमें सुख नहीं मानता, इससे नितान्त दुःख और दुर्गति ही प्राप्त होती है, यह ऊपर की व्याख्या से आपको ज्ञात हुआ होगा और निम्नलिखित श्लोक से भी आपको विशेष बोध होगा—

चौरो दुःखमुपैति नारकसमं मन्योऽपि तत् सन्निधेः
शुष्के प्रज्वलिते हिंसार्द्र मपि किं नो वन्हिना दह्यते ॥
सद्योलुण्ठन सद्यदग्ध चरम ग्रामेऽग्नितप्त प्रजा।
मद्योत्पत्तिः भवेः समं सगरजैः किं किं नले भै तथा ॥१॥

भावार्थ—चोरी करने वाला नारकीय दुःखको भोगता है एवं उसके पास रहने वाले मनुष्य भी नरक के दुःखों को भोगते हैं। जैसे सूखे काष्ठ के साथ गोली लकड़ी भी जल जाती है; दुराचारी सगर के पुत्रों के मदोन्मत हो जाने पर उनकी प्रजा को भी अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ा।

चोर लोग अपना मन मीठा करके कुछ दिन खुश-नुमा रहने लगें, पर अंतिम तो वही बनता है, जो ऊपर

कहा गया है, समझदारों ने तो यह घोषणा करदी है कि भूखे मरना अच्छा, मगर चोरी करना बुरा, इसलिए इस दुष्ट व्यसन को कभी नजीक न आने दें और चोरों के सम्पर्क में भी कदापि न रहें—

यदि आप छोटी या बड़ी कोई तरह की चोरी जाहिर या छिप कर करते हों तो उसे तत्काल त्याग दें इससे संसार में आप पर विश्वास जमेगा, और सच्ची कमाई की नीति आपके कण्ठ में वरमाला डालेगी।

❀ सातवाँ व्यसन पर स्त्री ❀

सधवा-विधवा-कुँवारी-पासवान या नातरेल सब पर स्त्रियां हैं, मतलब कि पँचों की साक्षी से विवाहित निज़ पत्नि को छोड़ कर इतर सब पर स्त्रियों में शुमार हैं इस व्यसन का मगसद परस्त्रि गमन से है, इस ही तरह स्त्री के लिये सब प्रकार के पुरुष समझ लेना।

पर स्त्री के सेवन से क्या क्या नुकशान होते हैं, वे अब क्रमशः दिखाने का प्रयत्न करते हैं—

सब से पहिले तो परस्त्री भोगी को यह समझना चाहिए कि कोइ पुरुष मेरी स्त्री पर बुरी निगाह डाले या बाह्यविनोद करे अथवा काम क्रीड़ा करे और मुजे मालूम हो जाय तो मैं क्या विचार करूं? क्या उपाय सोचूं?

+ परस्त्री में मस्त मस्तानों का कहना है कि कन्या और विधवा परस्त्री में नहीं गिने जा सकते; चूंकि वे दोनों पतिरहिता हैं, इसलिए मात्र सधवा ही परस्त्री में गिनना चाहिये उनसे मेरा नम्र निवेदन है कि पर स्त्री का पति या स्वामी के साथ सम्बंध नही है. अपनी विवाहित स्त्री के अतिरिक्त तमाम अन्य 'पर स्त्री' मानी जाती हैं।

और किस तरह प्रतिकार करूं ? बस वही सब ठीक पर-स्त्री के पति को भी होता है, मालूम होते ही वह क्रोध से थमथमा उठता है, उसके नाश का विचार करता है, नाना उपाय सोचकर उसकी मरम्मत कर देता है या प्राण लेकर ही शान्ति का दम भरता है, कितना लाभ हुवा ? समझ म आ गया ? अब आगे देखिये--

यदि आप व्यभिचारी हैं तो आपकी देवी भी व्यभिचारणी होने की सभावना है, वह यह सोचेगी कि मुझको छोड़कर मेरा पति अन्यत्र मौज मजा करता फिरता है तो मैं भी स्वतत्र हू, अनेक जगह घूमा करूँ, मेरा पति जब पत्नीव्रत नहीं पालता है, तब मुझे पतिव्रत पालने की क्या दरकार है ? इस तरह खुद की औरत भी व्यभिचारणी बन जाती है, दोनों का खराब चाल चलन (Loso charactor) देखकर उनकी सन्तान भी बिगड़ जाती है, फिर क्रमशः सारा ही घराण बिगड़ जाता है !

"कामातुराणां न भय न लज्जा" व्यभिचारियों को भय और लज्जा नहीं होती, यह सिद्धान्त भी सोलह

आना सत्य है, कामी पुरुष काम तृप्ति के लिये कैसे भी खतरनाक स्थान पर चला जाता है; मार्ग का भय उसमें ज़रा भी असर नहीं करता, लज्जा का दिवाला तो स्पष्ट नज़र आता है, कोई जाने या देखे या कहे, या फटकारे अथवा ठोक पीट करे तो भी शर्म नहीं आती—कहा है—

शर्म को भी वहां पर, शर्म आय है ॥
जो वे शर्म हो, के न शर्माय है ॥ १ ॥

यह तो दीपक की तरह स्पष्ट है कि पर स्त्री का सेवन उच्छिष्ट (झूठा-एँठा) भोजन के बराबर है, क्या आपको मालूम है कि झूठा भोजन का कौन अधिकारी है ? एँठा भोजन प्रायः चण्डाल या मंगते-भिखारी, खाया करते है, तब सोचिये कि मल-मूत्रादि दुर्गंधित पदार्थों से भरी हुई उच्छिष्ट स्त्री को सेवन करने से क्या पदवी मिलनी चाहिए ? सहसा यह मुख से निकल जायगा कि 'महाचण्डाल और महा मंगता; उसे कहना चाहिए, देखा जनाब ! कितनी बड़ी उपाधि से भूषित किया जाता है ।

पर स्त्री सेवन मे चोरी और अन्याई दोनों दोष लगते

है, मालिक के बिना हुक्म स्त्री ग्रहण करना चोरी हुई और व्यभिचारी तो प्रत्यक्ष है ही, संसार में सब से अधिक निन्दा पात्र ये दो ही वस्तुएँ हैं—

लाज जगत में शोग घातकी, चोरी और अन्याई ॥
इनको सेवन करने वाले, केवल दुर्गति पाई ॥ १ ॥
लाज घटे तुझ कुल तणी, घटे ताहरू ज्ञान ॥
आयुष ने चेतन घटे, घटे जगत में मान ॥ २ ॥

पर स्त्री पर राजा रावण की कथा दुनिया में मशहूर है। जैन हिन्दुओं का तो शायद बच्चा बच्चा जानता होगा, दशहरे में रावण की भारी कदर्थना की जाती है, इससे इस कथा की विशेष प्रख्याति हो गई है—

करीब ग्यारह लाख वर्ष पहिले बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनि सुव्रतस्वामी के शासन काल में राजा रावण ने न्यायशील रामचन्द्र नृपेन्द्र की सती सीता का अपहरण किया था, उसने उसे काफी समझाया था, पर उसके साथ कोई बेजाता कार्रवाई नहीं की गई— न जबरन किया गया न कुचेष्टाएँ की गई, यहाँ तक की

उसे छूया भी नहीं गया, तथापि पर स्त्री हरण मात्र के दोष को लेकर वाल्मीक कृत, तुलसी कृत, जैन रामायण और रामचरितादि में रावण की काफी भद्द उड़ाई गई है और पीछे से भी जिसके हाथ कलम चढ़ी उसने पूरी किल्ली उड़ाई, आज तक भी रावण को मारने की कदर्थना आबाल गोपाल से की जाती है, दशहरे के दिन हर एक कहते हैं—'चलो रावण मारवा चालो'-पर स्त्री के अपहरण मात्र से रावण की इस कदर दुर्दशा हुई तो परस्त्री भोगी के लिए क्या कहना चाहिए और उसके लिए क्या लिखा जाना चाहिए, इसका इन्साफ करना मैं वाचकों पर छोड़ देता हूं, सच्चा न्याय तौल कर जजमेन्ट (फैसला) देना।

बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने महाराणा भीमसेन की भार्या पद्मनी में आसक्त होकर उसको प्राप्त करने के लिए कितना भारी युद्ध किया, यह चितोड़गढ़ के इतिहास से मालूम होता है, एक वक्त तो पद्मनी बादशाह को चकमा देकर अपने पति को छुड़ा लाई और बाद जब अपनी रक्षा का कोई उपाय नहीं देखा तब उसने

प्राण विसर्जन कर दिये, कहने की गरज यह है कि पर स्त्री के पिपासु बादशाह ने कितना अनर्थ किया।

गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या में आसक्त इन्द्र को ऋषि के शाप से सहस्र भगी (हजार भग योनी वाला) होना पड़ा—धात की खण्ड के भरत में रहने वाला पद्मनाभ राजा ने नारद के मुख से सुनी हुई पाण्डवों की स्त्री द्रुपदी में आसक्त होकर देव द्वारा उसका अप हरण कराया, इससे श्री कृष्ण ने उसकी भारी दुर्दशा की, सति द्रुपदी सुरक्षित रही और राजा व्यर्थ कलंक में कलंकित हुवा—गुरु स्त्री के संग में चन्द्रमा कलंकित होकर क्षय दशा को प्राप्त हुवा। कहा गया है—

मूढ. परस्त्रियमुपेत्य कुवास्यवध—
दण्डापकीर्तिमृति दुर्गति दुःखपात्रम्॥
स्यात् अथ राजयुवतिरतिदोर्घ पाप—
लक्ष्मचयाविव विधोर्गुरुतल्पगस्य॥ १॥

भावार्थ—मूर्ख पुरुष पर स्त्री को प्राप्त करके दुर्वचन वधन-दण्ड प्रहार अपकीर्ति मरण और दुर्गत्यादि दुःख

का भाजन बनता है, गुरुपत्नी के संग से चन्द्रमा कलंकित होकर क्षय का प्राप्त हुआ। गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या पर आसक्त होकर ऋषि के शाप के इन्द्र कारण सहस्त्र भग वाला हो गया।

श्रीपाल कुमार की स्त्रियों में आसक्त बन कर पापी धवल ने कुमार को समुद्र में डाला, उनको मारने और मराने के अनेक उपाय किये, पर आखिर अपनी कटारी से स्वयं मर कर सातवीं नरक में गया और जगत में भारी निन्दित हुवा।

पर स्त्री का भोगी सदा चिन्तित रहता है, इससे उसका शरीर दिन प्रति दिन सूखता जाता है। सच है! चिन्ता को डाकिन और चिता की उपमा दी गई है—

चिन्ता डाकिन मन बसी, चुट चुट लोही खाय॥
रति प्रति कर संचरे, तोला तोला जाय॥ १॥
चिन्ता चिता का एक रस, इसमें अन्तर येह॥
चिंता जलावे मृतक जन, चिंता जीवित देह॥२॥

पर स्त्री का संभोगी इतनी अंधाधुंधी चलाता है कि व्रत नियम-पर्व-तपस्या का सहज ही खण्डन कर देता

है, उसके दारुण फल की जरा भी चिन्ता नहीं करता वह सब के आँख में धूल डाल कर काम करना चाहता है, सब अन्धे हैं, कोई कुछ नहीं देखता और न जानता है, इस प्रकार भोंकी की तरह काम किया करता है, आखिर पोल के ढोल जब बजने लगते हैं, तब घबड़ाता है और डूबतो तिनका पकड़ने कि तरह अपना बचाव करता है और दूसरे पर दोष मढ़ने का भरसक प्रयत्न करता है, पर अन्त में कुदरत उसको फटका मारती है, इससे वह नालायक सिद्ध होकर ठंडा पड़ जाता है।

कामदेव को नमस्कार है, कहाँ तक कहा जाय राजुल जैसी महासती को देख कर रथनेमि चलचित हो गये और केली क्रीडा की याचना की, महासती ने उपदेश का इन्जकशन (पिचकारी) लगाकर शान्त किये।

अब तक तो हमने पर स्त्री गमन पर ही व्याख्या की, पर अब पर पुरुष सेवी स्त्रियों के जीवन पर जरा दृष्टिपात करते हैं—

आपको मालूम तो होगा ही कि भर्तृहरि ने फकीरी

क्यों धारण की ? अपनी पत्नी पिंगला के व्यभिचार से उकसा कर योग धारण किया; हकीकत इस तरह बनी कि किसी ने महाराजा भर्तृहरि को अमर फल भेंट किया उसने अत्यन्त प्रेमशीला अपनी प्राणप्यारी पिंगला को दे दिया, उसने प्रेमवश अपने जार पुरुष को दिया, उसने अपनी अन्य प्रेमपात्री कलावती वेश्या को दे दिया, उसने राजा भर्तृहरी को नजर कर दिया, इस पर राजा साहबने इन्क्वायरी (पूछताछ) की, अमर फल का सारा रहस्य खुल गया महाराज के उस वक्त के ये उद्गार हैं—

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता ।
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्य सक्तः ॥
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या ।
धिक् तांश्च तञ्च मदनञ्च इमाञ्च माञ्च ॥१॥

भावार्थ—जिसकी (पिंगला स्त्री की) मैं निरन्तर चिन्ता करता हूं (अहर्निश प्रेम पूर्वक चाहता हूं) वह मेरे में विरक्त है (मुझे नहीं चाहती) वह अन्य पुरुष को इच्छती है, और वह अन्य में (स्त्री में) आसक्त है, तथा वह अन्य स्त्री मेरे लिए तुष्ठ है यानी मुझे चाहती

हैं, इसलिए धिक्कार हो उस रानी को, उस पुरुष को, कामदेव को उस स्त्री को, और मुझको।

जिसके वशवर्ती होकर जनता अपने जीवन को इस प्रकार विडम्बित करती है, बस यह कहते हुए राज्य विलास छोड कर योगी बन गए।

इसही तरह सुदर्शन सेठ पर आसक्त होकर कपिला और अभया रानी ने बड़ा हैरान किया आखिर शूली तक का मौका आगया, पर सुदर्शन सेठ निश्चल रहा।

राजा, महाराजा, सम्राट्, सेठ, साहूकार और अन्य बड़े बड़े घर की बहुतसी औरतें व्यभिचारणी होती हैं, ऐसा सुना जाता है-कोइ प्रधान—कर्मचारी से तो कोइ मुनीम गुमास्तों से तो कोइ डाक्टर वैद्यों से तो कोइ नौकर चाकर से तो कोइ दासियों के मार्फत अन्य जार पुरुषों से लगी रहती हैं, घर का धन खिला कर—उडा कर शील का दिवाला निकालती हैं, जो बराबरी के या बड़े आदमियों से फँस जाय तो द्रव्य लेकर शील का निलाम बोल देती हैं।

छोटी कोम की और निर्धन स्त्रियां तो छड़े चौक काम करती ज्ञात होती हैं, वे तो अन्न-वस्त्र में ही हर तरह तैयार हो जाती हैं-कइ परिव्राजिकाएँ, योगिनियाँ, साध्वणियाँ और भिक्षुकाएँ अपनी वासना तृप्त करने के लिए बड़े बड़े त्यागियों का दिल हिला देती है और अपना काम बना लेती हैं; ऐसा सुना जाता है; यदि सत्य हो तो हद हो गई, संसार के लिए यह एक धोखे की टट्टी साबित होगी, साधु के वेश में शयतान की मिसाल चरितार्थ होगी। बस अधम स्त्री के लिए इतना ही काफी है; इससे उलटा (पुरुष पक्ष में)समझ लेना।

यहाँ तक किस्सा सुना गया है कि पर स्त्री गमन करने वाला सोतेली माता, काकी, मामि, भुवा, माँसी, की लड़की बहन और बहन, के स्थान पर बहन, भोजाई, साली इत्यादि रिस्तेदार औरतें को फँसाकर वह नीच पुरुष अपनी काम पिपासा पूरी करता है, इससे जगत् में मुँह दिखाने लायक नहीं रहता।

जगत में व्यभिचार के एजन्ट (दलाल) भी मौजूद हैं, पुरुष और स्त्रियां ज़ाहिर या खानगी तौर पर दलाली

करते मालूम होते हैं, फिर चाहे वे राग से करें या लोभ से करें, मगर करते जरूर हैं ऐसे दुराचार के दलाल व्यभिचारी तो प्रायः होते ही हैं, पर भारी पाप का उपार्जन कर पापियों की गिनती में शुमार होते हैं।

कितना विषम जमाना है, पुरुष स्त्रियों की कैसी वृत्तियों है, किस कदर ढोंग रच कर और लोगों को धोखा देकर अपना काम बनाया जाता है, यह समझदारों से और सतर्क मनुष्यों से अब छिपा नहीं है, ऐसे दुराचारी धर्म कर्म मर्म और शर्म सब खो बैठते हैं, कितना जुल्म! कितना धोका!! कितना अनाचार!!! परमात्मा रक्षा करे।

उपरोक्त, बयान से आपको पता चल गया होगा कि इस व्यसन के सेवी की क्या दुर्दशा होती है, सभ्य संसार की दृष्टि से कितना नीचे गिर जाता है, ब्रह्मचर्य को खोकर अपनी शारिरीक मानसिक और आत्मिक तमाम शक्तियाँ नष्ट कर देता है, इसलिए वाँचकों से निवेदन है कि आप छोटे या बड़े किसी भी रूप में इस व्यसन को सेवन करते हों तो शीघ्रातिशीघ्र त्याग कर अपना श्रेय करें।

❀ उपसंहार ❀

उपरोक्त सातों व्यसनों की व्याख्या वाँचने से आपको ज्ञात होगया होगा कि इनके सेवन से मानव धर्म का किस कदर ह्रास होता है—जूआ से धन का नाश, इज्जत आबरू का नाश और मानसिक बल का नाश हो जाता है, इससे सातों व्यसनों का संगी बन जाता है,—मांसाहारी क्रूर प्रकृति का बनकर अनर्थ करता है, अनेक रोगों का घर बन जाता है, इससे बल और बुद्धि कमज़ोर हो जाती हैं—हराम खोर पागल सा बन जाता है, सभ्यता और शिष्टाचार तो मानो हवा खा जाते है, रक्त-मांस और हड्डियाँ कमज़ोर हो जाती हैं; तथा दिल और दिमाग बेकार हो जाते हैं—वेश्या गमन तो व्याधियों की खान है, वीर्य नाश होकर सारा शरीर बेकार बन जाता है, इससे लज्जा और मर्यादा विनाश हो जाती हैं, जगह जगह अनादर होता है—शिकारी तो निरअपराधी जीवों को मार कर स्वर्ग और मोक्ष का मानो बहिस्कार (Boycott) करता है; ऐसे लोग हत्यारों की गिनती

में गिने जाते हैं, हत्यारों का मुह देखना भी पाप समझा जाता है, उसका सवेरे मुंह देखने में आजाय तो रोटी नहीं मिलती, ऐसी संसार की मान्यता है—चोरी करने से जेल में जाना होता है, वहां कडे नियन्त्रण में रह कर कडी मजूरी करनी पडती है, कोइ अपने घर में नहीं आने देता, हिंसा—व्यभिचारादि दुष्ट कर्म इससे उत्पन्न होते हैं—पर स्त्री गमन तो प्रत्यक्ष लोकद्वय विरुद्ध है इस के संगी का तन, मन, धन, का नाश तो होता ही है, पर स्थान स्थान पर उसको अपमानपूर्ण फिटकार दिया जाता है, इसके अनेकानेक शत्रु हो जाते हैं, चौदहवें रत्न का प्रयोग (मार पीट) तो होता ही है, पर यावत् मृत्यु तक नोबत गुजरती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि सातों व्यसनों का सेवन गृहस्थ नीति समाज नीति–राजनीति और धर्म नीति से विरूद्ध है, इससे धर्म कर्म सब नाश होते हैं, मनुष्य मानव जीवन हार जाता है, इसलिए आपसे विज्ञप्ति है कि अपने हित के लिए, सदाचार और सद-

विचार के खातिर, जीवन की उन्नति और विकास के हेतु इन व्यसनों का सर्वथा त्याग कर अपना भला कर लेना चाहिये; यह मानव भव बारम्बार नहीं मिलेगा; इसलिये सचेत होजाइये। समय भागा जारहा है, बिजली के झपकारे मोती पिरोना हो तो पिरो लिजिये, इन व्यसनों में से एक भी व्यसन यदि आपको छूता हो तो उसको जलाञ्जली देकर प्रतिज्ञाबद्ध हो जाईये, इसमें आपका महान् हित है और परम कल्याण है।
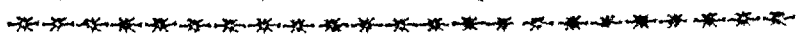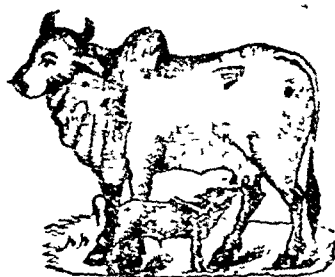
: उपदेश :

महानुभावो ! यदि दुनिया में रह कर आपको अपनी उन्नति करना है, उदित जीवी बनना है, योग्यता प्राप्त करना है, सेवा भावी बनना है, कल्याण मार्ग को खोजना और मानव जीवन को सफल करना है तो इस ग्रन्थ म वर्णित सातों व्यसनों का त्याग करिये।

मानव भव पुनः पुनः नहीं मिल सकता, आयुष का पता नहीं कब खत्म हो जायगा, अपनी और अन्य की कुछ भलाई करना हो तो करलें, इस रत्नचिन्तामणि मनुष्य भव को कंकर की तरह मत गुमाईये, क्यों नाहक व्यसनों में कलंकित होकर जीवन बरबाद करते हैं। धन दौलत, कुटुम्ब परिवार और ऐश आराम की सामग्रियाँ यहीं पर रह जाती हैं, जन्में थे तब बंदी मुट्ठी की तरह बहुमूल्य थे, पर मरने पर मुट्ठी खुल गई और कीमत प्रकट होगई। श्रजआणी गोत्र के संस्थापक (अस्मद्-गोत्रीय संस्थापक) वैराग्यवान् वज्र कुमारजी कहते हैं-

नन्दन की नव रही. बीसल की बीस रही।
रावण की सब रही, पीछे पछताओगे॥
इतते न लाए हाथ, इतते न चले साथ।
इतही को जोरी तेही, इत्तही गुमाओगे॥१॥
हेम, चीर, घोड़ा, हाथी काहुके न चले साथी।
बाट के बटाऊ जैसे कल ही उठ जाओगे।
कहत है छजु कुमार, सुन हो माया के यार।
बंधी मुट्ठी आए थे, पसार हाथ जाओगे॥२॥

कितना बढ़िया कवित्त कहा गया है, इस पर मनन करिये; और व्यसनों से मुक्त होईये—आपको एक नूतन अद्भुत बात सुनाकर यह ग्रन्थ पूरा कर दिया जाता है—

❀ निष्पाप नगर ❀

संसार में ऐसा कोइ देश, प्रान्त, नगर, शहर या गांव न होगा कि जिसमें व्यसनों का साम्राज्य न हो, परन्तु यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि मैं एक ऐसे निष्पाप नगर का आख्यान सुनाता हूँ कि जो व्यसनों से सर्वथा मुक्त है।

एक भटकता हुवा प्रवासी टेक्सास (अमेरिका) के कीन नाम के एक नगर में पहुँच गया, मुसाफिर खूब प्यासा था, सिगारेटों की खर्ची भी खतम होगई थी— एक दुकान के पास जाकर प्रवासी ने पूछा—यहाँ सिगारेट मिलेगा ? दुकान के पास एक बाई बैठी थी, उसने कहा—यहाँ सारे गाँव में तुमको सिगरेट नहीं मिलेगा, कारण की यहाँ इसका प्रचार ही नहीं है।

मुसाफिर ने पुनः पूछा—थोडा शराब तो मिल सकेगा ? बाई ने कहा-शराब तो ठीक, पर चाय-काफी भी यहाँ नहीं मिल सकती, हम तमाम शुद्ध वनस्पति आहारी है और व्यसन की कोइ वस्तु बेंचने की और काम में लाने की यहाँ सख्त मनाई हैं।

लेखक का कहना है कि करीब ६०००० साठ हजार आदमी इस नगर में बसते हैं, तमाम जन मानों व्रतधारी समान जिन्दगी बिताते हों, ऐसा मालूम होता है। यहाँ न तो परमात्मा के मन्दिर हैं न धर्म प्रचारक ही हैं; तथापि स्वेच्छा से दृढता पूर्वक अपना सादा जीवन गुजारते है।

इस नगर की स्थापना हुवे करीब ५० पचास वर्ष हुवे हैं, इसमें पिछले ४८ बयालीस वर्षों में चोरी का मात्र एक केस बना है जिससे सारा शहर गमगिनी में डूब गया था, सतर्क तलास करने से पता चला कि वह चोर पागल था, इस ही से यह बनाव बना, यहाँ करीब करीब चोरी होती ही नहीं है और इसही लिए पुलिस या अदालत की दरकार नहीं रहती।

पिछले महायुद्ध में दो शराबी यहाँ नज़र आये थे, पर वे तो लश्करी आदमी थे, अपने देश में जाते हुवे इस नगर की सरहद में होकर गुजरे थे; नगर पालक ने ऐसी अनेक आश्चर्य जनक बातें उस प्रवासी को सुनाई— नगरवासी शराब-बीड़ी को छूते नहीं हैं, इतना ही नहीं, किन्तु मस्तक में डालने का सुगंधी तैल—पाउडर और अन्य श्रृंगारिक चीजों को भी नहीं छूते हैं। यहाँ नाटक-सीनेमा तो कोई जानता ही नहीं हैं।

जहाँ इतनी सादाई से लोग अपना जीवन बसर करते हों, वहाँ जूआँ और नशा बाजी आदि व्यसन तो रह

भी कैसे सकती हैं ? एकन्दर शहर बड़ा सुखी और शान्ति प्रधान है—वैभवविलास की प्रचुर सामग्री के मध्य में एक ऐसा व्यसन और विलास मुक्त नगर हो, यह आज के युग में भारी आश्चर्य स्मारक है।

(श्री मेस जर्नल ता० १६ २ ४१ से उद्धृत)

मुमुक्षो ? आपके हित के लिए काफी लिख कर हमने अपना कर्तव्य पालन कर दिया है, अब आप इस पर खूब मनन कर अपने श्रेय के लिये इन व्यसनों का त्याग कर अपना फर्ज अदा करें।

ॐ शान्तिः

मु० जोधपुर-मारवाड़ आषाढ़ शु० ५ रविवार वि स० १९९८ सन् १९४१	Veerputra Anand Sagar